श्री सुदर्शन संदेश

15/-
जून 2022
वर्षः 19 अंकः 7

जय जय यतिराज
तुम्हारी जय होवे!

श्रीश्रीश्री चिन्ना जीयर
रामानुज स्वामी जी महाराज

श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

श्री सिद्धदाता आश्रम में ब्रह्मोत्सवम्

श्री सिद्धदाता आश्रम में आयोजित ब्रह्मोत्सव में हमारे परम पूज्य श्री गुरू महाराज जी अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज, आरा बिहार से आए जगदगुरु स्वामी ज्योतिनारायणाचार्य जी महाराज, वृंदावन बड़ा खटला से आए स्वामी श्री रामेश्वराचार्य जी महाराज भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी का 1-2, पूजन अर्चन करते हुए, 3-शोभायात्रा में भागीदारी करते हुए। 4- वैकुंठवासी गुरु महाराज की समाधि पर फूलों की चादर चढ़ाते हुए 5-सांस्कृतिक प्रस्तुति की झलक 6- शोभायात्रा का विहंगम दृश्य और 7- अर्चकों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए श्री गुरु महाराज जी।

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

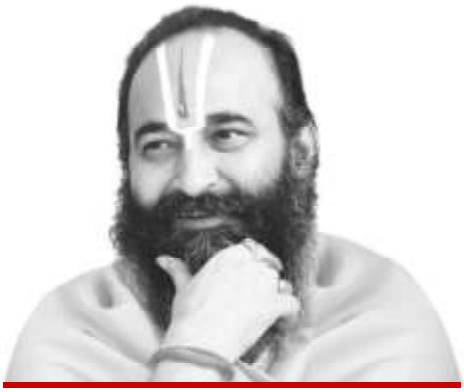

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

अधिपति– श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

"वैकुंठवासी श्री गुरु महाराज जी ने श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम की स्थापना तभी की जब उनके ईष्ट ने यहां आने वालों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने का वचन दे दिया। तभी से यह स्थान तीर्थ हो गया। यहां आने वालों को, आस्था रखने वालों के जीवन में धर्मचतुष्टय की कमी नहीं रह सकती। सोचिए जो सिद्धों को भी देने वाला है वह क्या आपको क्या नहीं दे सकता है."

गुरु अमृत है जगत में, बाकी सब विषबेल,
सतगुरु संत अनंत हैं, प्रभु से कर दें मेल।

वर्ष: 19, अंक: 7 हिन्दी मासिक

जून 2022

संरक्षक :
अनन्त श्री विभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

सलाहकार: डी. सी. तँवर

प्रकाशक : जनहित मानव कल्याण केन्द्र

पत्राचार : श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम,
श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल–सूरजकुण्ड मार्ग,
फरीदाबाद–121003 (हरियाणा)

दूरभाष : 9910907109

E-mail : shrisidhdataashram.org@gmail.com
website : www.shrisidhdataashram.org

वैधानिक : न्यायक्षेत्र दिल्ली ही होगा।

स्वत्वाधिकारी जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक प्रह्लाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–95, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित एवं ई–9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित।

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'
(9911161753)

कृपया श्री सुदर्शन संदेश में प्रकाशन के लिए अपनी शिकायतें, सुझाव, लेख, संस्मरण या अनुभव पत्राचार के पते यानि श्री सिद्धदाता आश्रम को भेजें। आप इन्हें आश्रम की ईमेल पर भी भेज सकते हैं।

अनुक्रमणिका

1. श्रीगुरुगीता : गुरुमन्त्र सभी महामन्त्रों से अधिक महत्वपूर्ण
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 5
2. संपादकीय : बाबा ने जो कहा, सो किया–कर रहे हैं
शकुन रघुवंशी श्रीधर 06
3. बिना शुल्क का सहज साधन
श्री वैकुंठवासी गुरु महाराज जी ...8
4. श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना क्यों हुई
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 12
5. भगवान के लिए हठवादिता श्री वै. गुरु महाराज जी ...24
6. संस्कार : अन्नप्राशन 29
7. धर्म की रक्षा करते हैं महापुरुष
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 31
8. श्री सिद्धदाता आश्रम को जानें 37
9. गुरु परम्परा का प्रभाव 40
10. श्री रामानुज जन्म 42

⏭ श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में आयोजित ब्रह्मोत्सव में भगवान के दिव्य विग्रहों का अभिषेक आरती करते अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज।

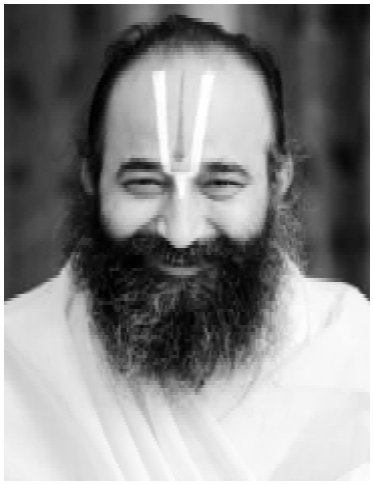

गुरूमन्त्र सभी महामन्त्रों से अधिक महत्वपूर्ण

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति–श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरूत्यागाद् भवेन्मृत्युर्मन्त्रत्यागाद्दरिद्रता। गुरू मन्त्रपरित्यागी रौरवं नरकं व्रजेत्।।203।।
शिवकोधाद् गुरूस्त्राता गुरूकोधाच्छिवो न हि। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरोराज्ञां न लंघयेत्।।204।।
सप्तकोटि महामन्त्राश्चित्तविभ्रंशकारकाः। एक एव महामन्त्रो गुरूरित्यक्षरद्वयम्।।205।।
न मृषा स्यादियं देवि मदुक्तिः सत्यरूपिणी। गुरूगीतासमं स्तोत्रं नास्ति नास्ति महमीतले।।206।।

अर्थात् *गुरू का त्याग करने से मृत्यु आती है, गुरूमन्त्र का त्याग करने से दरिद्रता आती है, और गुरू एवं मन्त्र को छोड़ने से रौरव नरक मिलता है। शिव के कोध से गुरू रक्षा करते हैं, लेकिन गुरूदेव के कोध से शिव रक्षा नहीं करते। इसलिए गुरूदेव की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। सात करोड महामन्त्र विद्यमान हैं। ये सब चित्त भ्रमित करने वाले हैं। गुरू नाम का दो अक्षरों वाला मन्त्र एक ही महामन्त्र है। मेरा यह कहना कभी झूठा नहीं होगा, वह सत्य स्वरूप है। इस धरती पर गुरू गीता के समान अन्य कोई स्तोत्र नहीं है।*

व्याख्या *: भगवान शिव माता पार्वती को बता रहे हैं कि अन्य अन्य मन्त्रों के बीच भटकना नहीं है। प्रथम तो गुरू ही पर्याप्त हैं, फिर उनके द्वारा दिया गया मन्त्र ही महामन्त्र मानना चाहिए। क्रमशः जारी*

गीली मिट्टी अनगढ़ी, हमको गुरुवर जान,
ज्ञान प्रकाशित कीजिए, आप समर्थ बलवान।

बाबा ने जो कहा, सो किया–कर रहे हैं

शकुन रघुवंशी श्रीधर

पिछले माह वैकुंठवासी गुरू महाराज जी की पुण्यतिथि और जन्मदिन आश्रम में मनाए गए।

विश्वास करें, मैं तो अपने अनुभव से बोल रहा हूं कि 2007 के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि मन उदास नहीं हुआ। जब मैंने इस बारे में अनेक लोगों से बात की तो वह भी इससे सहमत थे। हम कितना ही मानें और कहें कि वह कहीं नहीं गए, वह यहीं हैं, हमारे साथ हैं। यह उनका वचन था कि वह इस स्थान पर आने वालों को अनंत काल तक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करते रहेंगे। लेकिन जैसे ही 22 मई नजदीक आती थी, हमारे अंदर में एक ज्वारभाटा सा उमड़ने लगता था। और उस दिन तो लोगों में कोई उत्साह नजर नहीं आता था। बाबा को मानने वालों के चेहरों पर एक उदासी सी, अशांति सी नजर आती थी। अनेक लोगों को कोनों में सुबकते देखा है मैंने। औरों की क्या कहूं, स्वयं भी उनमें शामिल रहा। सारा ज्ञान, विश्वास तिरोहित हो जाता था कि आज तो उनकी पुण्यतिथि है। इस तिथि का अर्थ ही है कि वह दिव्यात्मा अपना चोला छोड़कर चली गई है। अब हम केवल उसकी याद में कुछ कर सकते हैं, वह हम करेंगे।

22 मई कम से कम मुझ जैसे लोगों के जीवन में एक दबाव लेकर आती थी कि वह कहां है, क्या कर रहा है। क्या ऐसा करना उसको जरूरी था। थोड़ा समय और रह जाता तो उसका क्या जाता। आदि इत्यादि। यह दिन बहुत भारी पड़ता रहा है। 2007 के बाद एक तरह से यह दिन तन, मन और आत्मा को झिंझोरता आ रहा है। लेकिन इस बार कुछ अलग हुआ है।

हालांकि मैं आपको बता दूं कि जब भी आश्रम में कोई मांगलिक कार्य होता है अथवा कोई भी उत्सव मनाया जाता है, उसकी याद इसी प्रकार से आती है कि आज तुम होते तो कितना अच्छा होता।

मुझे याद है कि वर्ष 2007 में हम 19 से 23 अप्रैल तक श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का लोकार्पण कर रहे थे, बाबा हमारे साथ थे। बहुत अच्छा लग रहा था कि बाबा के ईष्ट का मंदिर बनकर तैयार हो गया था। लेकिन एक व्यक्ति (पीसी वर्माजी), दुखी था।

उन्होंने मुझे बताया कि गुरूजी अब जाने वाले हैं। उनका मन था कि मंदिर का लोकार्पण न होवे। वह मुझसे बोले, श्रीधर गुरू जी जाने वाले हैं। मैं चौंक कर उनकी ओर देखता हूं, अंकल जी क्या बात कर रहे हैं। वो बोले, गुरूजी ने कहा था कि मंदिर बनाते ही जाऊंगा। और गुरूजी ने आज तक कोई गलत बात, झूठी बात नहीं बोली। मुझे उनके एक एक शब्द पर पूरा विश्वास है।

मंदिर का लोकार्पण हुआ। तत्कालीन मुख्यमंत्री हरियाणा भूपेन्द्र सिंह हुड्डा आए और बहुत से वीआईपी आए। हमारे संप्रदाय के अनेक आचार्य पहुंचे। सभी ने बाबा को शुभकामनाएं दीं। बाबा खुश थे। लेकिन चूंकि मैं कुछ सुन चुका था, सो मुझे पहली बार उनकी प्रसन्नता रहस्यमयी लग रही थी। लेकिन सच बताऊं, उन्हें देखकर नहीं लग रहा था कि वो चले जाएंगे।

उस समय मैं दिल्ली से आश्रम आता था, सो बड़े बड़े दिनों में आ पाता था। 21 मई को किसी भक्त का मेरे पास फोन आया। पूछा, गुरुजी को क्या हो गया है। मैं गुस्से में आ गया, दुनिया को संभालने वाले को क्या होगा। गुरूजी ठीक हैं। कहकर मैंने फोन काट दिया।

वास्तव में मैं इतना भी अपडेट नहीं था कि बाबा अस्पताल में हैं। इसके बाद मैंने एलपी अग्रवाल जी को फोन किया कि गुरू ठीक हैं। उन्होंने कहा कि अगर ठीक होते तो ऐसा थोड़े ही होता। मेरे हाथ से मोबाइल छूटकर धड़ाम जमीन पर गिरा और आश्रम पहुंचकर ही रुका। बहुत बड़ी संख्या में भक्तों का जमावड़ा लगा था। लेकिन मुझे तो वर्मा जी का चेहरा नजर आ रहा था, ठीक कह रहे थे आप- गुरूजी ने कभी गलत नहीं कहा, और जो कहा, उससे अधिक किया।

दुनिया रो रही थी, लेकिन मेरे शरीर में जैसे पानी ही न हो। गुरूजी के शरीर की अंत्येष्टि होने के तीन दिन बाद घर पर चिंघाड़ें मार मारकर रोया। घंटे भर रोता रहा। मेरा बाबा गया।

उसके बाद तो हर वर्ष 22 मई, 27 मई के साथ साथ हर उत्सव पर मुझे उनकी बहुत याद आती थी और कहीं न कहीं खुद को अकेला पाता था। लोगों को कहता कि बाबा कहीं नहीं गए। वो यहीं हैं, लेकिन मन अपनी ही उधेड़बुन में लगा रहता। कहता- तू अकेला है श्रीधर। बाबा आप भी होते तो यह दिव्यधाम स्वर्ग बन जाता।

अपनी संपादकीय सेवाओं को पूर्ण करते हुए, उत्सवों के मंचों का संचालन करते हुए, उनके वचनों को लिपिबद्ध करते हुए मैंने हजारों बार आंखों के कोनों से आंसू पौंछे हैं। लेकिन इस बार के 22 मई और 27 मई को केवल एक बार ऐसा हुआ।

पहली बार वास्तव में लगा है कि मेरे बाबा कहीं नहीं गए हैं। वह यहीं हैं, हमारे साथ हैं, आज भी कृपाएं कर रहे हैं, चमत्कार दिखा रहे हैं। मैं क्यों रोऊं। जहर खिलाने वाले खिला रहे हैं, वो हमें बचा रहे हैं। उन्होंने कभी गलत नहीं कहा- वह यहीं हैं। **जय गुरुदेव!**

श्री गुरूजी उवाचः
(साधना खण्ड)

बिना शुल्क का सहज साधन

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

इस यथार्थ वादी जगह से भिन्न कुछ भी नहीं है। यह जीव स्वयं को कर्ता स्वीकारने लगता है, स्वयं को ब्रह्म मानने का भ्रम जीने लगा है। सभी चार्वाक के मत को स्वीकारने लगे हैं–

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमं कुतः ।। चार्वाक्

कलियुग में पंचामृत या चरणामृत के स्थान पर सोमरस पान का प्रचलन हो गया। ब्राह्मण वर्ग जो तपस्वी और विद्वद्वर्ग कहलाता रहा, वह भी चषक पान करके अपने धर्म को भूल चुका है। शाकाहारी भी आमिष भोजन के आदी हो गए। क्लबों में जीवन की चर्चा करना भी पाप कथा है। अतः मैं आप लोगों को इस विषय में कुछ भी नहीं कहना चाहूंगा। आज का युवा वर्ग अपना धरातल, अपनी मिट्टी की गंध छोड़कर योरोपीय सभ्यता का दास हो गया है।

यह संसार पाप का समुद्र है। मनुष्य का मन मछली बन गया है। क्योंकि मछली बिना जल के नहीं रहती, चाहे कितना भी मलिन-जल हो, मछली वहाँ ही रहना स्वीकारती है। जल के अभाव में तड़पने लग जाती है और मर जाती है। अब पापमय जो यह कलियुग है, उसमें हमारा मन मछली बन गया है। यह सत्य है, परन्तु हमें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

मेरे प्रेमियों ! कलियुग में खराबी है, विकृतियाँ हैं, किन्तु उस परम प्रभु ने हमारे ऊपर बहुत बड़ी कृपा की

है। भगवान् जी का नाम दयानिधि, कृपासागर, करुणासिन्धु हैं। वह सदा अहैतुकी कृपा हमारे ऊपर अर्थात् जीव पर करते रहते हैं। उन्होंने यह जानकर बहुत बड़ी कृपा की, कि कलियुग, घोर युग आयेगा, मनुष्य की आयु कम हो जाएगी, बुद्धि बल भी क्षीण हो जाएगा। शारीरिक शक्ति का भी ह्रास हो जाएगा और धन बल भी कम हो जाएगा। रुपये का मूल्य घटता ही जाएगा। हम जरूर पति कहला रहे हैं, कोई खरबपति, कोई अरब पति और कोई करोड़पति। लखपति की गणना होगी ही नहीं।

हमें लक्ष्मीपति, सम्पदापति आदि नाम भी दिए जायेंगे। किन्तु इस पति शब्द का कोई मूल्य नहीं रहेगा।

पति बन रहे हैं, पर यह बहुत बड़ा अभाव सा है। जब आपके पास कागज के टुकड़ों का पहाड़ होगा, किन्तु इनसे विनिमय नहीं हो सकेगा। प्राचीनकाल में प्रचुर धन की मात्रा थी, असंख्य स्वर्ण के सिक्के ही थे। हीरे, मोती, माणिक्य आदि रत्न तथा स्वर्ण का व्यापार होता था। उसके पश्चात् चाँदी का व्यापार होने लग गया। चाँदी के सिक्के हमारे समय तक खूब चले। अब क्या रह गया? रह गया केवल कागज! और उस कागज के हम पति बन गए। यह रुपया कभी भी मूल्य रहित हो सकता है, यह युग कमी का है, अभाव का है, किन्तु जब परमात्मा ने महान् दया हमारे ऊपर की है, कलियुग में उन्होंने कृपा करके सहजता ला दी।

प्रथम हमारे ऊपर यह कृपा की कि :-

कलि कर एक पुनीत प्रतापा।

मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ।। (मानस)

भगवान ने प्रत्येक युग के प्रभाव को दृष्टिगत रखते हुए उस युग के अनुकूल साधन निर्मित किये। पूर्व तीनों युगों में मनसा, वाचा, कर्मणा द्वारा किए हुए

प्राचीनकाल में प्रचुर धन की मात्रा थी, असंख्य स्वर्ण के सिक्के ही थे। हीरे, मोती, माणिक्य आदि रत्न तथा स्वर्ण का व्यापार होता था। उसके पश्चात् चाँदी का व्यापार होने लग गया। चाँदी के सिक्के हमारे समय तक खूब चले। अब क्या रह गया ? रह गया केवल कागज! और उस कागज के हम पति बन गए।

कर्मों की गणना की जाती थी। किन्तु कलियुग में मन के विकारों के लिए मुक्ति दे दी। यदि आप मन में विकार लाते हैं या मन में किसी का अहित विचारते हैं, यह कर्म प्रभु द्वारा क्षम्य है। मानसिक विकार, मानसिक वासना, मानसिक द्रोह आदि पाप कर्म में शामिल नहीं किये जायेंगे।

जबकि अन्य युग में मानसिक अपराध भी पाप था। भगवान जी कहने लगे कि कलियुग में आयु कम हो जाएगी, शरीर की शक्ति भी कम हो जाएगी, मेरे जीव मुझसे कैसे मिलेंगे? यदि ये जीव मुझसे नहीं मिल पायेंगे, मुझे बहुत तड़पन होगी।

अत: भगवान् ने अनुग्रह करते हुए मन के द्वारा किए हुए पापों को कर्म से हटा दिया। मानसिक पाप, दुष्कर्म पाप की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किए जायेंगे।

यदि आप मन में सच्ची भावना से यज्ञ कर लें, सुनिश्चित है कि आपको यज्ञ करने का फल चिन्तन मात्र से ही मिल जाएगा। यदि आप किसी के भी हित के लिए मानस में विचार करते हैं, आपकी भावना के अनुसार परोपकार का पुण्य अवश्य प्राप्त होगा। आपके मानस का शुभ विचार ही सदकर्म की श्रेणी में गिना जाएगा।

मन से तात्पर्य है कि जिसके मन में परोपकार के प्रति आस्था हो, दूसरों के लिए नेह, करुणा और सहायता की भावना हो, तथा भाव हो, विवशता या किसी के आदेश से नहीं, अपितु आपके मानस में भाव का उदय हो, इन दोनों के अतिरिक्त दृढ़ता अर्थात् अकल्पयशक्ति हो। श्रद्धा, भाव और दृढ़ता इनके समन्वय होने पर ही मानसी भाव को पुण्य का फल, यज्ञ का फल और तपका फल मिल जाता है।

विश्वास ही सम्बल

मानसी भावना महायज्ञ का प्रदान करने वाली है। परमात्मा ने कलियुग में मानव को अपने जीवन के उद्धार के हेतु, आवागमन के बन्धन से दूर रहने के लिए बहुत बड़ा अनुग्रह किया है। कलियुग में ही छूट है :

कलिजुग समजुग आन नहीं ।
जौ नर कर बिस्वास ।। (मानस)

मानस के रचयिता भक्तप्रवर तुलसीदास जी का कथन है कि कलियुग जैसा घोर युग नहीं है। इस युग में सतोगुणी वृत्ति का लोप हो जाता है, केवल राजसी और तामसी वृत्तियों के मेल में हर आदमी भटकता रहता है। यदि इस युग में सबसे बड़ी पूजा और उपासना है, वह विश्वास है। यदि हमें विश्वास नहीं, परमात्मा की प्राप्ति आपको कभी नहीं हो सकती।

साधना, उपासना या पूजा का मूलमंत्र ही विश्वास है। आपको विश्वास करना ही होगा।

व्यावहारिक जगत् ही विश्वास की धुरी पर आश्रित

जय श्रीमन्नारायण !!

श्री सिद्धदाता आश्रम अब आपके twitter पर भी!

श्री सिद्धदाता आश्रम की गतिविधियां एवं आने वाले कार्यक्रमों की सूचनाएं प्राप्त करने लिए ट्विटर पर सर्च करें #shrisidhdataashram
या नीचे दिए लिंक को टाइप कर सीधे हमारे ट्विटर हैंडल पर जाएं:-
https://www.twitter.com/sidhdataashram/

है। जब आदमी के मन में विश्वास की प्रतिष्ठा नहीं है, वह नास्तिक केवल नरक भोगने के लिए आज भी भटक रहा है और भविष्य में भी विविध योनियों में भटकता रहेगा। पति-पत्नी के सम्बन्ध का आधार क्या है? केवल विश्वास है। विश्वास के सम्बल पर लम्बी दूर तक की यात्रा हो जाती है।

विश्वास ही एक साधन अथवा मार्ग है, जो हमें परमात्मा के दर्शन कराता है और परमात्मा की प्राप्ति कराता है। जब हम विश्वासयुक्त हो जाते हैं भगवान् की प्राप्ति हमें अवश्य हो जाती है। आप विचार कीजिए, संसार के समस्त सम्बन्ध और नाते-रिश्ते विश्वास पर टिके हुए हैं। यदि विश्वास की डोरी टूट जाए, पति-पत्नी के मध्य सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। यदि पुत्र पिता का विश्वास न करे, पिता-पुत्र के मध्य कटुता का जन्म होगा और अन्त में दोनों के सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति आ जाएगी। यदि मित्र पर विश्वास नहीं करें तो मित्रता भंग हो जाती है और कल के मित्र ही आज के शत्रु बन जाते हैं। हमारे भौतिक जीवन में जितने भी सम्बन्ध हैं, वे सभी विश्वास की डोरी से बंधे हुए हैं। जब विश्वास हो जाता है, भाव, श्रद्धा और संकल्प के साथ सफलता पा लेता है, जो इस विश्वास के साथ प्रभु की मानसी पूजा भी करते हैं तो :-

गाइ राम गुन गन बिमल।
भव तर विनहिं प्रयास ।। (मानस)

श्रीराम जी के, श्रीकृष्णजी के गुणगान करने मात्र से ही वह इस भवसागर से पार पा लेता है। इस कलियुग के भगवान् ने कितना सहज साधन आपको दे दिया है। अरे! आपको कुछ भी नहीं करना है और न द्रव्य ही खरचना पड़ रहा है। बिना शुल्क के सहज साधन उपलब्ध हैं। **क्रमशः**

मंदिर का शीत काल समय

प्रात: 5:30 से 6:00 बजे मंगला आरती
प्रात: 6:00 से 7:00 बजे आराधना
प्रात: 7:00 से 7:15 बजे अर्चना
प्रात: 7:15 से 7:30 बजे बाल भोग
प्रात: 7:30 से 8:00 बजे शृंगार व आरती
प्रात: 8:00 से 11:45 मध्याह्न दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न 11:45 से 12:15 बजे आराधना व राजभोग
मध्याह्न 12:15 से 1:00 बजे दरबार /देव दर्शन

मध्याह्न 1:00 से 4:00 बजे विश्राम (कपाट बंद)

सायं 4:00 से 5:15 बजे दरबार/ देव दर्शन
सायं 5:15 से 5:45 बजे आराधना
सायं 5:45 से 6:10 बजे अर्चना
सायं 6:10 से 6:30 बजे राजभोग
रात्रि 6:30 से 8:15 बजे आरती व दर्शन
रात्रि 8:15 से 8:30 बजे शयन भोग व दर्शन
रात्रि 8:30 विश्राम (कपाट बंद)

मंदिर का ग्रीष्मकाल समय

प्रात: 5:30 से 6:00 बजे मंगला आरती
प्रात: 6:00 से 7:00 बजे आराधना
प्रात: 7:00 से 7:15 बजे अर्चना
प्रात: 7:15 से 7:30 बजे बाल भोग
प्रात: 7:30 से 8:00 बजे शृंगार व आरती
प्रात: 8:00 से 11:45 मध्याह्न दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न 11:45 से 12:15 बजे आराधना व राजभोग
मध्याह्न 12:15 से 1:00 बजे दरबार /देव दर्शन

मध्याह्न 1:00 से 4:00 बजे विश्राम (कपाट बंद)

सायं 4:00 से 6:15 बजे दरबार/ देव दर्शन
सायं 6:15 से 6:45 बजे आराधना
सायं 6:45 से 7:10 बजे अर्चना
सायं 7:10 से 7:30 बजे राजभोग
रात्रि 7:30 से 8:45 बजे आरती व दर्शन
रात्रि 8:45 से 9:00 बजे शयन भोग व दर्शन
रात्रि 9:00 विश्राम (कपाट बंद)

दोपहर 1 से 4 बजे तक आश्रम/मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है।

प्रात: 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

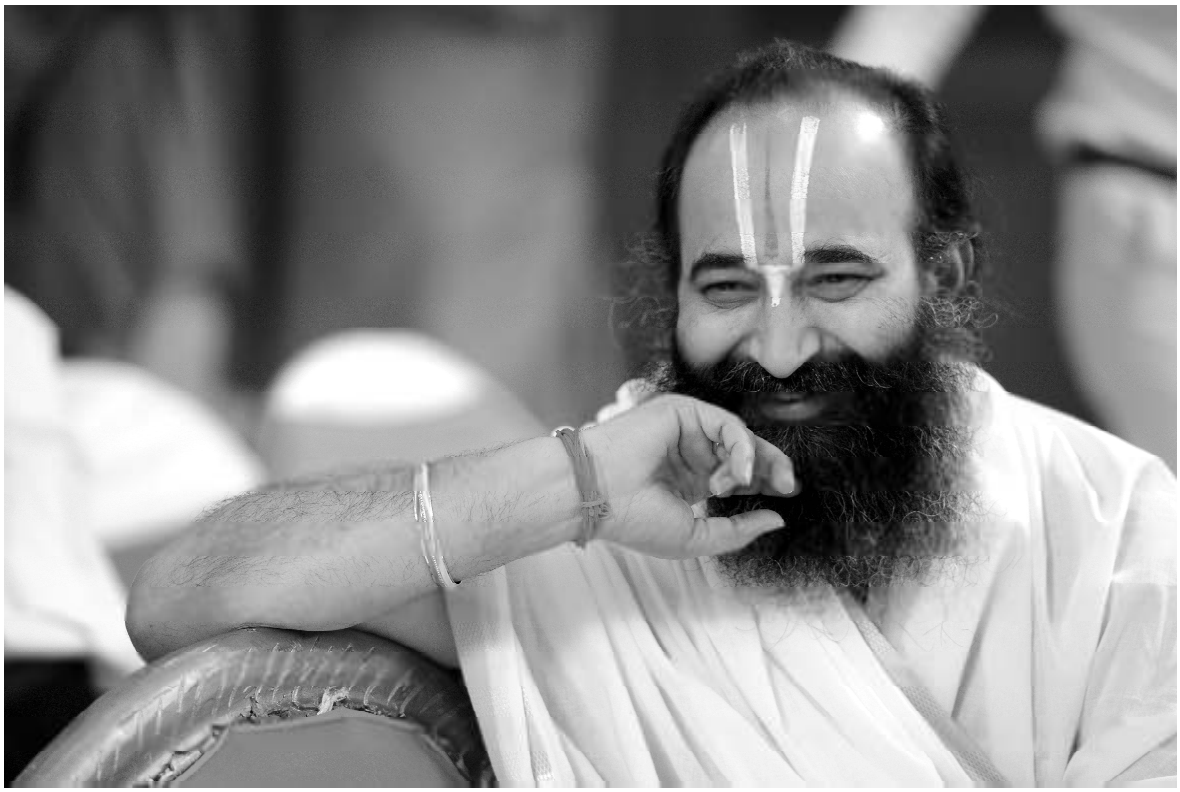

श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

(आनंदोत्सव)

श्री सिद्धदाता आश्रम का 33वां स्थापना दिवस व
परमपूज्य श्री गुरु महाराज जी की 85वीं जयंती
कार्यक्रम : शुक्रवार, 27 मई 2022

आज हम श्री सिद्धदाता आश्रम का 33वां स्थापना दिवस बना रहे हैं और श्री गुरु महाराज जी की 85वीं जयंती मना रहे हैं। आप सभी को इस शुभ अवसर पर शुभकामनाएं।

श्री गुरु महाराज ने श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना मानव जाति के कल्याण एंव परोपकार के लिये की। उन्होनें अपने ईष्ट की आज्ञा से इस स्थान का निर्माण किया और उन्होने अपने ईष्ट से यह वचन लिया जो भी जीव इस स्थान पर श्रद्धा भाव से आऐगा उसे धर्म, अर्थ,

काम, मोक्ष की प्राप्ति होगी। इसके पश्चात अपने ईष्ट की आज्ञा से इस स्थान का निर्माण किया।

श्री गुरु महाराज भूत, भविष्य, वर्तमान के ज्ञाता थे। श्री गुरु महाराज कहते थे जो पुण्य तीर्थ करने से मिलता है वह इस स्थान पर आने से मिलेगा। यह स्थान दैहिक, दैविक, भौतिक आपदाओं के निवारण का केन्द्र बना रहेगा। और आज हम देखते हैं जो भी यहां भक्त जिस भाव से आता है उसे उसी भाव के अनुसार उसे प्राप्ति होती है। वैसे तो शास्त्रों में कहा है-

हरि व्यापक सर्वत्र समाना

लेकिन जो स्थान महापुरुषों के द्वारा स्थापित किये जाते हैं वहां भगवान की विशिष्ट कृपा रहती है।

समय-समय पर इस धरा पर भगवान की इच्छा से महापुरुषों का अवतरण होता रहता है।

विप्र धेनु सुर संत हित लीन मनुज अवतार

परित्राणाय साधुनाम विनाशाय च दुष्कृताम्

महापुरुष वो ही है जिसमें परमात्मा के समान गुण हों। सबके कल्याण के लिये कार्य करें।

संत ह्दय नवनीत समाना

संत के अंदर वात्सल्य, प्रेम, सरलता होनी चाहिये।

संत जीवों के कल्याण का मार्ग बताते हैं, नाम, दीक्षा देकर प्रभु के शरणागति करवाते हैं।

गुरु नानक देव कहते हैं-

चारों वेद, पुराण सकल देखे सर्व ढंढोल

पूजस नाहि हरि हरे नानक नाम अमोल

संत दयाल कृपाल भये मो पर जब यह बात बताई

सर्वधर्म जब पूरण होइहे नानक गहो प्रभु शरणाई

श्री गुरु महाराज कहते थे- हमें कैसा जीवन जीना चाहये?

जब हम जन्में तो जग हंसा और हम रोये

ऐसी करनी कर चलें हम हंसें जग रोये

हमें गुरु के वचनों पर विश्वास करना चाहिये, उनके बताये हुये मार्ग पर चलना चाहिये।

प्राचीनकाल में प्रचुर धन की मात्रा थी, असंख्य स्वर्ण के सिक्के ही थे। हीरे, मोती, माणिक्य आदि रत्न तथा स्वर्ण का व्यापार होता था। उसके पश्चात् चाँदी का व्यापार होने लग गया।

गुरु के वचन प्रतीत न जेही

सपनेहुं सुख सुलभ न तेही

एक बार इंद्र अपनी महफिल में आनंद उठा रहा था। तभी देव गुरु बृहस्पति का सभा में आगमन हुआ। गुरु के लिए सोने चांदी का सिंहासन रखा हुआ था। लेकिन इन्द्र ने उनको नजरअंदाज किया और अपने आनंद में डूबा रहा।

गुरु समझ गए- यह मद में चूर है। गुरुजी सभा से चले गए।

इंद्र ने उनके जाने पर भी कोई ध्यान नहीं दिया।

मेरे प्रेमियो, ऐसे अनेक इंद्र समाज में घूम रहे हैं। जो सांसारिक लिप्साओं में लिपटे हुए हैं। सुख में उन्हें भगवान और गुरु याद नहीं रहते। अपने पद, प्रतिष्ठा के दम पर सोचते हैं, एक गुरु गया तो क्या, दूसरा गुरु बना लूंगा।

गुरु बृहस्पति के जाने के बाद इंद्र को आकाशवाणी हुई कि देवगुरु का अपमान कर तुमने सबसे बड़ी भूल की है। अब इंद्र और देवता तेजविहीन हो जाएंगे। लेकिन अहंकार में चूर इंद्र ने सोचा, एक गुरु गए तो क्या हुआ, किसी दूसरे को गुरु बना लूंगा। कुछ समय बाद वृत्रासुर

नाम के राक्षस ने इंद्र को हराकर स्वर्ग पर कब्जा कर लिया। इंद्र ने ब्रह्माजी से बचाने की प्रार्थना की। ब्रह्माजी बोले, गुरु बृहस्पति तो अंतरध्यान हैं। तुम ऋषि तृष्टा को गुरु बना लो और वृत्रासुर के अंत के लिए यज्ञ करो।

इंद्र ने ऋषि तृष्टा से यज्ञ करवाया- लेकिन उन्होंने गलत मंत्र उच्चारण कर दिया, जिससे वृत्रासुर के हाथों इंद्र के वध का अर्थ निकल गया।

क्रोधित इंद्र ने ऋषि तृष्टा का सर धड़ से अलग कर दिया।

इंद्र गलती पर गलती कर रहा है... अब उसने गुरु एवं ब्राह्मण की हत्या कर दी।

इंद्र ने पुन: ब्रह्माजी से प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने देवगुरु बृहस्पति से इस संकट का हल बताने की प्रार्थना को।

गुरु बहुत दयालु होते हैं। जल्द रीझ जाते हैं। गुरु बृहस्पति ने बताया- महर्षि दधीचि यदि अपनी अस्थियां दे दें, तो उससे बनने वाले शस्त्र से वृत्रासुर का वध हो जाएगा। इंद्र के मांगने पर महर्षि दधीचि ने अपनी अस्थियां दे दीं। जिनसे बने शस्त्र से वृत्रासुर का वध हुआ और इंद्र को स्वर्ग का राज मिल गया।

मेरे प्रेमियो, यह इंद्र की स्थिति हम मानवों की भी है। वह अपने सुख के लिए किसी की अस्थियां भी मांगने से नहीं चूकता। लेकिन संत, ऋषि परोपकार के लिए अस्थियां भी दे देते हैं।

कायदे में इंद्र को पहले देवगुरु बृहस्पति के अनादर का प्रायश्चित करना चाहिए था। इसके बाद गुरु हत्या, ब्रह्म हत्या के दोष से मुक्त होना चाहिये था। फिर गुरु से क्षमा मांगनी चाहिये थी। राजकाज का नंबर सबसे बाद में आता है। लेकिन मानव ऐसा नहीं सोचता।

चाहता है कि गुरु उनकी सब मानें, उन्हें गुरु की न माननी पड़े।

अरे मेरे प्रेमियो, गुरु को तुम्हारा सोना, चांदी नहीं चाहिये।

केवल उनके बताए मार्ग को मान लो, कल्याण होगा ही, यह तय है।

गुरु के वचन प्रतीत न जेहि,
सपनेहुं सुख सुलभ न तेहि।

जब हम सब लोगों की सांसारिक विषय, वासनाओं की महफिल सजी होती है, हर सुख हमारे पास होता है। तभी हर व्यक्ति के जीवन में गुरु का आगमन होता है। मतलब आपके जीवन में गुरु का आगममन तभी होता है जब जीव भगवान से दूर हो रहा है।

अपनी सांसारिक मोह, माया की महफिल में गाफिल हो गया है, अब वह पथ भ्रष्ट होने वाला है।

गुरु उस समय जीव को चेताने के लिये उसके जीवन में आते हैं।

गुरु आपसे कुछ नहीं चाहते।

गुरू तो देने के लिये आते हैं, उन्हे सिर्फ भाव चाहिये।

भावों विद्यते देवा:

भगवान के पांच रूप हैं -

1. परावतार: जो वैकुण्ठ में विराजमान रहते हैं श्री नारायण

2. व्यूह अवतार: सृष्ठि संहार पालन के लिये

3. विभव अवतार: जो विशेष वैभव लेकर अवतार लेते हैं जैसे राम, कृष्ण आदि

4. अर्चावतार: जो मूर्ति में रहते हैं।

5. अंतरयामी: जो जड़ चेतन में विराजमान हैं।

आज हम श्री गुरु महाराज को अर्चावतार के रुप में मान रहे हैं।

मैं अंत में यही कहूंगा-

भला किसी का तुम कर न सको
तो बुरा किसी का मत करना
पुष्प अगर तुम बन न सको

तो कांटे भी तुम मत बनना
कबीरा सोई पीर है जो जाने पर पीर
जो पर पीर न जानहि सो काफिर बैपीर

शेषावतार भगवान श्री रामानुजाचार्य महाराज दक्षिण भारत की घटना है। अपने अनेक त्रिदण्ड संन्यासी शिष्यों के सहित वो तिरूनारायण स्वामी के दर्शन के लिये गये। इतने संतों के चरण कमल देखकर भगवान प्रसन्न हो गये। भगवान ने हाथ का इशारा दिया अपने अर्चकों को बोले-

आचार्य जी को बुलाओ! ठाकुर जी बुला रहे हैं तो भीतर जाएंगे ही। आचार्य भीतर पहुंचे। बोले- कहिए भगवान क्या आज्ञा है। भगवान बोले-

आप सभी का समाधान करते हैं हमारा भी समाधान कर दीजिये। भगवन क्या समाधान करें? बोले- हमने रामावतार लिया और समुद्र के तट पर खडे होकर घोषणा की, एक बार कोई आकर कह दे, मैं आपकी शरण में हूं तो मै उसे अभय प्रदान कर देता हूं। इतनी बड़ी प्रतिज्ञा सुनकर भी गिने चुने लोग शरण में आये। जयंत आया वो भी नारद जी के धक्का देने से, श्रद्धापूर्वक नहीं आया। विभीषण भी आया, कौवा आया, सुग्रीव भी मार खाकर आया, गिनती के लोग शरण में आये। और इस कलिकाल में इतने जीवों को तुमने शरणागत किया, भक्त कैसे बना दिया? जो कार्य हम नहीं कर पाये वो आप ने कैसे कर दिया?

अवतार लेकर नहीं कर पाये वो आपने कैसे कर दिया। बोले-

हम नहीं बताएंगे। भगवान बोले- क्यों?

क्योंकि आप मर्यादा का अतिक्रमण कर रहे हैं। सिंहासन पर बैठे हैं। बताओ, ऐसे पूछा जाता है। आपने गीता में कहा है-

किसी से कुछ पूछना हो तो पहले उसे साष्टांग प्रणाम करो! फिर परिस्थिति देखो, जिज्ञासा का अनुकूल अवसर है कि नहीं, फिर विनम्र भाषा में अपनी जिज्ञासा रखो, सेवापूर्वक जिज्ञासा रखो।

आप सभी का समाधान करते हैं हमारा भी समाधान कर दीजिये। भगवन क्या समाधान करें? बोले- हमने रामावतार लिया और समुद्र के तट पर खडे होकर घोषणा की, एक बार कोई आकर कह दे, मैं आपकी शरण में हूं तो मै उसे अभय प्रदान कर देता हूं। इतनी बड़ी प्रतिज्ञा सुनकर भी गिने चुने लोग शरण में आये।

आपने कुछ किया? आदेश दे रहे हो। मर्यादा से पूछोगे तो बताएंगे। भगवान मुस्कराए बोले -ठीक है।

अर्चकों से कहा हमें बाहर लाओ। गर्भग्रह से बाहर आ गये ठाकुर जी। आसन थोड़ा नीचे किया ठाकुर जी का, आचार्य का ऊंचा आसन लगाओ। अब बताइये। भगवान बोले।

आचार्य बोले- इतनी भीड़ में बतायें? भगवान बोले- अगर ऐसा था तो गर्भग्रह में ही व्यवस्था हो जाती। आपने पहले क्यों नहीं बताया कि भीड़ में नहीं बताएंगे। अब बोल रहे हो?

रहस्य की बात समुदाय में नहीं बाताई जाती। भगवान बोले- धीरे से कान में बता दो। यही तो हम चाह रहे थे कि आपकी आज्ञा हो, तुरंत आचार्य ने अपना कासाय, भगवान के मस्तक पर रखा उनके दक्षिण कर्ण में अष्टाक्षर मंत्र का उच्चारण कर दिया। बोले हो गया समाधान।

भगवान बोले- यह कोई समाधान थोड़ी है। ऐसे तो आप लोग चेला बनाते हो। आचार्यचरण मुस्कुराकर बोले ऐसे ही समझ लो। भगवन हम जीवों के पास कुछ नहीं है। आपके पवित्र चरित्र, आपके पवित्र नाम के अतिरिक्त हमारे पास धरा क्या है? आपका नाम सुना सुना कर आपके गुण सुना सुना कर, आपकी लीला सुना सुना कर इतने जीवों को आपकी शरण में लाया हूं। भगवान ने हंसते हुये कहा-

मंत्र तो आपने दे दिया, अब चेला हो गये।

आपको दक्षिणा क्या दें। आर्चायचरण ने कहा- अब किसी शिष्य से दक्षिणा की कोई कामना नहीं की गई। मंत्र की कोई कीमत नहीं होती।

शिष्य को ऐसा चाहिये, गुरु को सर्वत्र दे
गुरु को ऐसा चाहिये, शिष्य से कछु नहीं लेय

लेकिन भगवन आप खुद कह रहे हैं दक्षिणा क्या अर्पित करें, तो हम अवसर नहीं चूकेंगे। दक्षिणा जरुर लेंगे। भगवान ने कहा -क्या दक्षिणा दें?

आचार्य बोले- कोई भी जीव आपकी शरण में आवे, आप उसके गुण, दोष का विचार किये बिना शरण में ले लेना, यही दक्षिणा दे दीजिये। इतना सुनते ही भगवान की आंख में आंसू भर आये। भगवान ने कहा इसी करूणा के कारण तो आचार्य की महिमा हमसे अधिक है।

एक बार पुन: आप सभी भक्तों को श्री सिद्धदाता आश्रम के स्थापना दिवस और परम पूज्य श्री गुरु महाराज जी की जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं व मंगलकामनाएं।

जय श्रीमन्नारायण

हमसे जुड़ने के लिए आज ही हमारे फेसबुक पेज श्री सिद्धदाता आश्रम को लाइक करें

श्री सिद्धदाता आश्रम (श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम) की गतिविधियां भजन, सत्संग, लाइव आरती, श्री गुरु महाराज जी के दर्शन एवं आने वाले कार्यक्रमों की सूचनाएं प्राप्त करने लिए आप विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म के जरिये हमसे जुड़ सकते हैं या नीचे दिए लिंकों को टाइप कर सीधे हमारे सोशल मीडिया पेजेस (फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, मोबाइल ऐप) पर जा सकते हैं।

Connect with us on :
Facebook - https://www.facebook.com/ShriSidhdataAshram

Free Mobile App - Shri Sidhdata Ashram

(Downloard the App on Google Play Store)

Visit our Website:
https://www.shrisidhdataashram.org

प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सर्च करें

#ShriSidhdataAshram

पंचांग

कलियुग वर्ष ५१२४, विक्रम संवत २०७९, श्री शालिवाहन संवत १९४४, राक्षस नामक संवत्सर, उत्तरायण-दक्षिणायन, ग्रीष्म ऋतु (समय घंटे/मिनट में हैं तथा सूर्यास्त के अतिरिक्त दो. १२ उपरांत के समय १३, १४... इस प्रकार हैं।)

जून	ज्येष्ठ-आषाढ	तक	नक्षत्र	तक	योग	तक	करण	तक	चंद्र राशि प्रवेश		सूर्योदय	सूर्यास्त
१ बुध	शु.प. २	२१.४७	मृग	१३.००	शूल	२५.३३	बालव	०८.३३	मिथुन		५.०९	६.४३
२ गुरु	शु.प. ३	२४.१८	आर्द्रा	१६.०४	गंड	२६.३५	तैतिल	११.०३	मिथुन		५.०९	६.४३
३ शुक्र	शु.प. ४	२६.४२	पुनर्वसु	१९.०५	वृद्धि	२७.३३	वणिज	१३.३१	कर्क	१२.२० उ.	५.०९	६.४४
४ शनि	शु.प. ५	२८.५३	पुष्य	२१.५५	ध्रुव	२८.१९	बव	१५.५०	कर्क		५.०९	६.४४
५ रवि	शु.प. ६	अहोरात्र	श्लेषा	२४.२५	व्याघात	२८.४८	कौलव	१७.५०	सिंह	२४.२५ उ.	५.०८	६.४५
६ सोम	शु.प. ६	०६.४०	मघा	२६.२६	हर्षण	२८.५२	गरज	१९.२२	सिंह		५.०८	६.४५
७ मंगल	शु.प. ७	०७.५५	पूर्वा	२७.५०	वज्र	२८.२६	विष्टि	२०.१९	सिंह		५.०८	६.४६
८ बुध	शु.प. ८	०८.३१	उत्तरा	२८.३१	सिद्धि	२७.२६	बालव	२०.३२	कन्या	१०.०४ उ.	५.०८	६.४६
९ गुरु	शु.प. ९	०८.२२	हस्त	२८.२६	व्यतिपात	२५.४९	तैतिल	२०.००	कन्या		५.०८	६.४६
१० शुक्र	शु.प. १०	०७.२७	चित्रा	२७.३७	वरीयान	२३.३५	वणिज	१८.४२	तुला	१६.०७ उ.	५.०८	६.४७
११ शनि	शु.प. ११	०५.४६	स्वाती	२६.०५	परिघ	२०.४६	बव	१६.४०	तुला		५.०८	६.४७
	शु.प. १२	२७.२४										
१२ रवि	शु.प. १३	२४.२७	विशाखा	२३.५९	शिव	१७.२६	कौलव	१४.००	वृश्चिक	१८.३३ उ.	५.०८	६.४७
१३ सोम	शु.प. १४	२१.०३	अनुराधा	२१.२४	सिद्ध	१३.४२	गरज	१०.४८	वृश्चिक		५.०८	६.४८
१४ मंगल	पूर्णिमा	१७.२२	ज्येष्ठा	१८.३२	साध्य	०९.४०	विष्टि	०७.१४	धनु	१८.३२ उ.	५.०९	६.४८
							बालव	२७.२७				
१५ बुध	कृ.प. १	१३.३२	मूल	१५.३३	शुभ	०५.२८	तैतिल	२३.३८	धनु		५.०९	६.४८
					शुक्ल	२५.१४						
१६ गुरु	कृ.प. २	०९.४६	पू.षा.	१२.३७	ब्रह्म	२१.०८	वणिज	१९.५६	मकर	१७.५५ उ.	५.०९	६.४९
१७ शुक्र	कृ.प. ३	०६.११	उ.षा.	०९.५६	ऐंद्र	१७.१७	बव	१६.३२	मकर		५.०९	६.४९
	कृ.प. ४	२७.००										
१८ शनि	कृ.प. ५	२४.२०	श्रवण	०७.३९	वैधृति	१३.५०	कौलव	१३.३६	कुंभ	१८.४३ उ.	५.०९	६.४९
१९ रवि	कृ.प. ६	२२.१९	धनिष्ठा	०५.५६	विष्कंभ	१०.५२	गरज	११.१४	कुंभ		५.०९	६.४९
			शतभिषा	२८.५३								
२० सोम	कृ.प. ७	२१.०२	पू.भा.	२८.३५	प्रीति	०८.२८	विष्टि	०९.३५	मीन	२२.३६ उ.	५.०९	६.५०
२१ मंगल	कृ.प. ८	२०.३१	उ.भा.	२९.०३	आयुष्मान	०६.४१	बालव	०८.४१	मीन		५.१०	६.५०
२२ बुध	कृ.प. ९	२०.४६	रेवती	अहोरात्र	सौभाग्य	०५.३१	तैतिल	०८.३३	मीन		५.१०	६.५०
					शोभन	२८.५६						
२३ गुरु	कृ.प. १०	२१.४२	रेवती	०६.१४	अतिगंड	२८.५२	वणिज	०९.०९	मेष	०६.१४ उ.	५.१०	६.५०
२४ शुक्र	कृ.प. ११	२३.१३	अश्विनी	०८.०४	सुकर्मा	अहोरात्र	बव	१०.२४	मेष		५.१०	६.५१
२५ शनि	कृ.प. १२	२५.१०	भरणी	१०.२४	सुकर्मा	०५.१३	कौलव	१२.०९	वृषभ	१७.०२ उ.	५.११	६.५१
२६ रवि	कृ.प. १३	२७.२६	कृत्तिका	१३.०६	धृति	०५.५३	गरज	१४.१७	वृषभ		५.११	६.५१
२७ सोम	कृ.प. १४	अहोरात्र	रोहिणी	१६.०२	शूल	०६.४६	विष्टि	१६.३९	वृषभ		५.११	६.५१
२८ मंगल	कृ.प. १४	०५.५३	मृग	१९.०५	गंड	०७.४७	चतुष्पाद	१९.०७	मिथुन	०५.३३ उ.	५.११	६.५१
२९ बुध	अमावस्या	०८.२२	आर्द्रा	२२.०८	वृद्धि	०८.४९	किंस्तुघ्न	२१.३७	मिथुन		५.१२	६.५१
३० गुरु	शु.प. १	१०.५०	पुनर्वसु	२५.०७	ध्रुव	०९.५०	बालव	२४.०१	कर्क	१८.२३ उ.	५.१२	६.५१

भक्तों को अपने साथ रख लिया

भगवान महादेव के भक्त नंदी और किरात की कहानी

प्राचीनकाल में नंदी नामक वैश्य अपनी नगरी के एक धनी-मानी और प्रतिष्ठित पुरुष थे। वह प्रतिदिन भगवान शंकर की पूजा करते थे। जिस मंदिर में नंदी वैश्य पूजा करते थे, वह बस्ती से कुछ दूर जंगल में था। एक दिन की बात है कि कोई किरात शिकार खेलता हुआ उधर से निकला। वह प्राणियों की हिंसा करता था, उसकी बुद्धि जडप्राय थी। दोपहर का समय था। वह भूख-प्यास से व्याकुल हो रहा था। मंदिर के पास आकर वहां के सरोवर में उसने स्नान किया और जलपान करके अपनी प्यास बुझाई। जब वह वहां से लौटने लगा, तब उसकी दृष्टि मन्दिर पर पड़ी और उसके मन में यह इच्छा हुई कि मंदिर में चलकर भगवान का दर्शन कर लूं। उसने मंदिर में जाकर भगवान शिव का दर्शन किया और अपनी बुद्धि के अनुसार उनकी पूजा की। उसने गंडूष जल से भगवान शिव का स्नान कराकर बिल्वपत्र और मांस चढ़ा दिया।

प्रेममुग्ध होकर वह शिवलिंग के सम्मुख साष्टांग दंडवत करने लगा। उसने दृढ़ता से यह निश्चय किया कि आज से मैं प्रतिदिन भगवान शिव की पूजा करूंगा। दूसरे दिन प्रात: काल नंदी वैश्य पूजा करने आए। मंदिर की स्थिति देखकर वे अवाक् रह गए। मांस के टुकड़े इधर-उधर पड़े थे। उन्होंने सोचा - 'यह क्या हुआ? मेरी पूजा में ही कोई त्रुटी हुई होगी, जिसका यह फल है। उन्होंने मंदिर साफ किया और पुन: स्नानादि करके भगवान की पूजा की। घर लौटकर उन्होंने पुरोहित से सारा समाचार कह सुनाया और बड़ी चिंता प्रकट की। पुरोहित को क्या पता था कि इस काम में भी किसी का भक्ति-भाव हो सकता है। उन्होंने कहा -अवश्य ही यह किसी मूर्ख का काम है, नहीं तो रत्नों को इधर-उधर बिखेरकर भला कोई मंदिर को अपवित्र एवं भ्रष्ट क्यों करता। अगली दोपहर फिर से किरात मंदिर में आया और उसने नंदी की पूजा नष्ट-भ्रष्ट कर दी एवं गंडूष-जल से स्नान कराकर बिल्वपत्र और मांस चढ़ाया।

नंदी ने सोचा कि उस लिंगमूर्ति को ही अपने घर ले आना चाहिए। व्यवस्था के अनुसार शिवलिंग वहां से उखाड़ लाया गया और नंदी वैश्य के घर विधि-पूर्वक उसकी प्रतिष्ठा की गई। प्रतिदिन नियमानुसार किरात

अपने समय पर भगवान शंकर की पूजा करने आया, परंतु मूर्ति को न पाकर सोचने लगा – 'यह क्या, भगवान तो आज हैं ही नहीं। मंदिर का एक-एक कोना छान डाला, लेकिन उसके भगवान उसे नहीं मिले। किरात की दृष्टि में वह मूर्ति नहीं थी, स्वयं भगवान थे।

अपने जीवन सर्वस्व प्रभु को न पाकर वह विह्वल हो गया और बड़े आर्त-स्वर में पुकारने लगा – 'महादेव! मुझे छोड़कर तुम कहां चले गए? प्रभो! अब एक क्षण का भी विलंब सहन नहीं होता। मेरे प्राण तड़फड़ा रहे हैं, यदि तुम्हारे दर्शन नहीं होंगे तो मैं जीकर क्या करूंगा?' यह कहकर किरात ने अपने हाथ से अपने शरीर का सारा मांस काटकर उस स्थान पर रखा, जहां पहले शिवलिंग था। क्योंकि अब उसने प्राण-त्याग का निश्चय कर लिया था। किरात की तन्मयता देखकर शिव ने अपनी समाधि भंग की। वे उसके चर्मचक्षुओं के सामने प्रकट हो गए। बोले – महाप्रज्ञ! वीर! मैं तुम्हारे भक्तिभाव एवं प्रेम का ऋणी हूं, तुम्हारी जो बड़ी-से-बड़ी अभिलाषा हो, वह मुझसे कहो, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूं। भगवान की वाणी और संकल्प ने किरात को बाहर देखने के लिए विवश किया। परंतु जब उसने जाना कि मैं जो भीतर देख रहा था, वही बाहर भी है, तब तो उसकी प्रेम भक्ति पराकाष्ठा को पहुंच गई और वह सर्वांग से नमस्कार करता हुआ श्री भगवान के चरणों में लोट गया।

किरात की निष्काम प्रेमपूर्ण प्रार्थना सुनकर भगवान बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने सदा के लिए उसे अपना पार्षद बना लिया। उसे पार्षद रूप में प्राप्त करके भगवान शंकर को बड़ा आनंद हुआ और वे अपने उल्लास को प्रकट करने के लिए डमरू बजाने लगे। भगवान शंकर के डमरू के साथ ही तीनों लोकों में भेरी, शंख, मृदंग और नगाड़े बजने लगे। सर्वत्र 'जय-जय' की ध्वनि होने लगी। शिव भक्तों के चित्त में आनंद की बाढ़ आ गई। वह आनंद-कोलाहल तत्क्षण नंदी वैश्य के घर पहुंच गया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और वे अविलंब वहां पहुंचे। किरात के भक्तिभाव और भगवत्प्रसाद को देखकर उनका हृदय गद्गद हो गया और जो कुछ अज्ञान रूप मल था उनके चित्त में कि 'भगवान धन आदि से प्राप्त हो सकते हैं' वह सब धुल गया। वे मुग्ध होकर किरात की स्तुति करने लगे – 'हे तपस्वी! तुम भगवान के परम भक्त हो, तुम्हारी भक्ति से ही प्रसन्न होकर भगवान यहां प्रकट हुए हैं। मैं तुम्हारी शरण में हूं। नंदी की बात से किरात को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने तत्क्षण नंदी का हाथ पकड़कर भगवान के चरणों में उपस्थित किया। उस समय भोले बाबा सचमुच भोले बन गए। उन्होंने किरात से पूछा – ये कौन सज्जन हैं? मेरे गणों में इन्हें लाने की क्या आवश्यकता थी? किरात ने कहा – प्रभो! ये आपके सेवक हैं, प्रतिदिन रत्न-माणिक्य से आपकी पूजा करते थे। आप इनको पहचानिए और स्वीकार कीजिए। शिव ने हंसते हुए कहा – मुझे तो इनकी बहुत कम याद पड़ती है। किरात ने प्रार्थना की – भगवन! मैं आपका भक्त हूं और यह मेरा प्रेमी है। आपने मुझे स्वीकार किया और मैंने इसे, हम दोनों ही आपके पार्षद हैं। अब तो भगवान शिव को बोलने के लिए कोई स्थान ही नहीं था। भक्त की स्वीकृति भगवान की स्वीकृति से बढ़कर होती है। लोग मुख से प्रशंसा करने लगे कि किरात ने नंदी वैश्य का उद्धार कर दिया। उसी समय बहुत-से ज्योतिर्मय विमान वहां आ गए। भगवान शंकर का सारूप्य प्राप्त करके दोनों भक्त उनके साथ कैलाश गए और मां पार्वती के द्वारा सत्कृत होकर वहीं निवास करने लगे। ये ही दोनों भक्त भगवान शंकर के गणों में 'नंदी' और 'महाकाल' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार नंदी की भक्ति के द्वारा किरात की भक्ति को उत्तेजित करके और किरात की भक्ति के द्वारा नंदी की भक्ति को पूर्ण करके आशुतोष भगवान शिव ने दोनों को स्वरूप-दान किया और कृतकृत्य बनाया।

बड़े काम का है गन्ने का रस

गर्मियों में गन्ने का जूस सिर्फ प्यास ही बुझाने का काम नहीं करता, बल्कि आपकी सेहत के लिए भी बहुत अच्छा होता है। गर्मियों के मौसम में लोगों का ठंडी चीजों को खाने और पीने का मन करता है। अगर आपका भी मन ऐसी चीजों को खाने और पीने का करता है तो आप अपनी डाइट में गन्ने के जूस को शामिल कर सकते हैं। ये न केवल गर्मियों से बचाएगा बल्कि आपको डिहाइड्रेशन से भी बचाने में मदद करता है। गन्ने के जूस में औषधीय गुण पाए जाते हैं जो इम्यूनिटी के लिए काफी अच्छे माने जाते हैं। गन्ने में कैल्शियम, पोटैशियम, आयरन, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस जैसे आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हड्डियों, दांतों, और पेट के साथ पूरे शरीर को लिए लाभदायक माने जाते हैं. तो चलिए आज हम आपको गन्ने के जूस को पीने के फायदों के बारे में बताते हैं।

गन्ने का जूस पीने के फायदे

गन्ने के जूस को इम्यूनिटी के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। गन्ने के जूस में फोटोप्रोटेक्टिव और एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मदद कर सकते हैं।

डिहाइड्रेशन से शरीर को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है. गन्ने के जूस को डाइट में शामिल कर डिहाइड्रेशन की समस्या से बचा जा सकता है।

डायबिटीज रोगी गन्ने के जूस का सेवन कर सकते हैं। क्योंकि गन्ने के जूस में आइसोमाल्टोज नामक तत्व पाया जाता है. आइसोमाल्टोज में ग्लाइसेमिक की मात्रा कम होती है और कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले फूड्स डायबिटीज के मरीजों में रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।

गन्ने में फइबर की अच्छी मात्रा पाई जाती है। डाइटरी फाइबर वजन कम करने के साथ-साथ लिपिड को नियंत्रित करने और ग्लूकोज को तोड़कर ऊर्जा बनाने में सहायक हो सकता है। अगर आपको पेट संबंधी समस्या है तो आप गन्ने के जूस का सेवन करें, क्योंकि गन्ने में फाइबर, विटामिन और मिनरल के गुण पाए जाते हैं, जो पेट से जुड़ी समस्याओं को दूर करते हैं।

कुछ विशेष वास्तु उपाय

आचार्य ऋषि सिंह

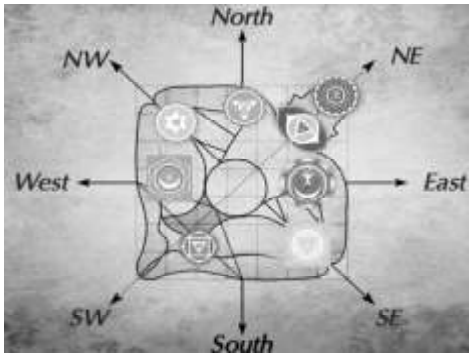

घर के मुख्य द्वार या प्रवेश द्वार की जब आप सजावट करते हैं तो यहां पर भगवान गणेश की प्रतिमा लगा सकते हैं। आप अपने मुख्य द्वार पर घंटी और बजने वाली झालरें भी लगा सकते हैं। इसकी आवाज से घर में सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है।

ड्राइंग रूम की सजावट

मुख्य द्वार की सजावट के बाद नंबर आता है ड्राइंग रूम का, क्योंकि यह वह जगह होता है जहां परिवार के सदस्य या मेहमान बैठते हैं। ऐसे में ड्राइंग रूम में रखे जाने वाले सोफे को लेकर यह सावधानी बरतें कि सोफा हमेशा दक्षिण- पश्चिम दीवार की तरफ ही लगाएं। अगर यहाँ सोफे नहीं रख रहे हैं, तो उसकी जगह पर काउच या दीवान रख सकते हैं, लेकिन ये भी दक्षिण –पश्चिम दीवार पर ही रखें।

वहीं अगर ड्राईंग रूम में मनोरंजन के साधन जैसे कि टेलीविजन, म्यूजिक सिस्टम रख रहे हैं, तो इन्हें उत्तर दिशा में रखें। तब यह वास्तु के अनुसार उचित होता है। अगर आप ड्राइंग रूम में भगवान गणेश की मूर्ति रखना पसंद करते हैं, ऐसे में कोशिश करें कि भगवान गणेश की बैठी हुई मुद्रा में मूर्ति ड्राइंग में रखें। यह भी ध्यान देने की बात है कि गणेश भगवान की मूर्ति का सूंड हमेशा बाएं तरफ मुड़ी हुई होनी चाहिए। साथ ही गणेश भगवान के हाथों में लड्डू या मोदक हो और साथ में मूषक का होना भी आवश्यक है।

पूजा घर की सजावट

हिंदू धर्म में पूजा पाठ का बहुत महत्व है। ऐसे में प्रत्येक घरों में मंदिर अवश्य पाया जाता है। ऐसे में अगर आप अपने पूजा घर को सजाने की सोच रहे हैं, तो यह ध्यान रखें कि पूजा घर की दीवारें हल्के पीले रंग से रंगी होनी चाहिए। ऐसे में यह बेहद शुभ माना जाता है। यह भी ध्यान रखें कि पूजा घर में कभी भी, किसी भी देवता की एक ही प्रतिमा रहनी चाहिए, तो इससे घर में सुख शांति बनी रहती है।

बेडरूम की दीवारों का रंग हमेशा हल्का रखें। आप हल्का गुलाबी, हल्का नीला, हल्का पीला जैसे रंगों का चुनाव कर सकते हैं। वहीं बेडरूम में अगर आप खूबसूरत दीवार घड़ी लगा रहे हैं तो आपको यह ध्यान देना चाहिए कि दीवार घड़ी कभी भी सर के ऊपर ना लगाई जाए।

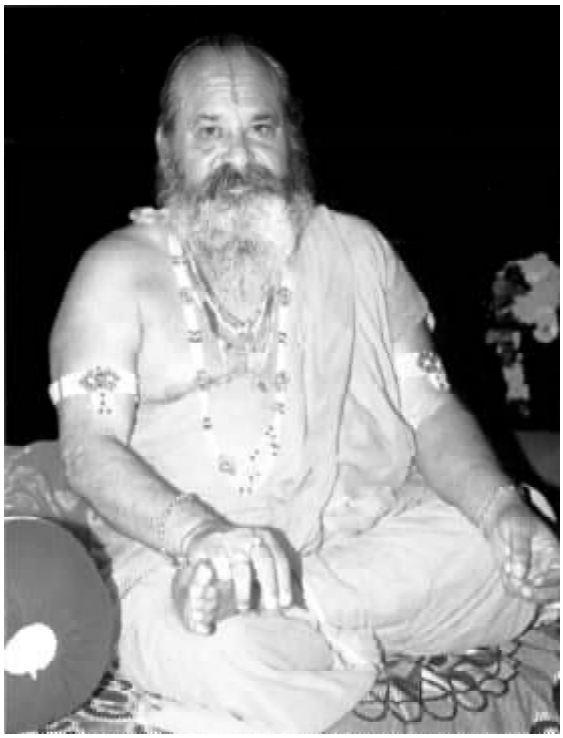

पहली बार में ही गुरूजी के वश में हो गया

चौ. राजेन्द्र खुटेला,
एडवोकेट, फरीदाबाद।

मैं एक वकील हूं। फरीदाबाद डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में प्रैक्टिस कर रहा हूं। कई वर्ष पूर्व एक शाम अपनी कॉलोनी की दुकान पर गया तो वहां एक दिव्य संत का चित्र देखकर दुकानदार से उनके बारे में पूछा। दुकानदार ने आश्चर्यचकित होकर कहा –आप इन गुरुजी को नहीं जानते। अपनी कॉलोनी के निकट ही तो इनका आश्रम है। फिर उस भाई ने गुरुजी की महिमा का जो वर्णन किया उसे सुनकर मेरे मन में स्वामी जी के दर्शन करने की लालसा बलवती हो उठी और मैंने उससे अनुरोध किया कि किसी दिन मुझे भी गुरूजी के दर्शन कराने ले चलो।

उसके कुछ दिन पश्चात् एक रविवार को मैं सपरिवार एक पारिवारिक समारोह में जाने के लिए तैयार हुआ ही था कि वही बन्धु आये और कहने लगे वकील साहब, चलिए गुरुजी के दर्शन करा लाऊं। मैंने टालना चाहा परन्तु उसने बताया कि आज माह का प्रथम रविवार है। आश्रम में सत्संग है, गुरुजी के दर्शन होंगे और उनके मधुर वचन भी सुनने को मिलेंगे। ऐसा अवसर आप न छोड़ें।

उसकी बातें सुनकर मैं केवल पांच मिनट के लिए आश्रम जाने और गुरु जी के दर्शन कर लौट आने की बात पर तैयार हो गया। मैंने सोचा आज दर्शन कर लेता हूं तथा फिर किसी दिन प्रवचन सुन लूंगा। अपनी पत्नी से पन्द्रह बीस मिनट में लौट आने को कहकर उन सज्जन के साथ आश्रम के लिए चल दिया।

कालोनी से बाहर आते ही उसने मुझे स्कूटर जंगल की ओर जाने वाले मार्ग पर

मोड़ कर सीधे चलने को कहा। मुझे शंका हुई परन्तु हिम्मत कर मैं आगे बढ़ता रहा। छः सात किलोमीटर चलने के पश्चात् बीच जंगल में एक बड़ी सी इमारत दिखाई दी। यही है गुरुजी का 'श्री सिद्धदाता आश्रम' उसने मुझे बताया। जंगल में विशाल जन समुदाय देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। आश्रम के बाहर ही कुछ स्कूटर खड़े थे। मुझे भी अपना स्कूटर वहीं खड़ा करने को कहा गया जूता स्टैण्ड पर भीड़ को देखकर पांच मिनट में अपने लौट आने की बात सोचकर मैंने अपने नए जूते, जिन्हें मैंने आज पहली ही बार पहना था, उतार कर अपने स्कूटर पर ही रख दिए।

आश्रम के अन्दर जाते हुए मेरे मन में बार–बार यही विचार आ रहा था कि कहीं कोई मेरा स्कूटर न ले जाए, कोई मेरे नये महंगे जूते न उठा ले।

इन्हीं शंकाओं में घिरा सत्संग हाल में पहुंचा। गुरुजी तो अभी हाल में आये नहीं थे। विशाल सत्संग हाल करीब–करीब भर चुका था।

गुरुजी के आने से पूर्व एक महात्मा जी ने कहना शुरु किया। पहले आश्रम की पवित्रता का बखान किया फिर एकाएक कहने लगे, भाईयो! आप लोग यहां गुरु जी के दर्शन करने, प्रभु नारायण का स्मरण करने आये हैं। यदि किसी प्रेमी के मन में अपने स्कूटर चोरी होने का भाव, कभी जूते उठा जाने का भय छाया रहेगा तो प्रभु स्मरण तो नहीं हो पाएगा। यह तो जूता स्मरण हो गया। आप यहां दाता के दरबार में आये हैं। आप यहां से कुछ लेकर ही जायेंगे, कुछ खोकर नहीं।

मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे महात्मा जी अभी मेरी ओर इशारा करके कहेंगे यह वकील कर रहा है जूता स्मरण।

तभी हाल में गुरुजी ने प्रवेश किया। मैंने भी उनका सभी के साथ–साथ जय–जयकार किया। गुरुजी का प्रवचन आरम्भ हुआ तो कुछ ऐसी बातें कहनी शुरू की जिन्हें मैं मन ही मन सोच रहा था। मुझे हैरानी थी कि मेरे मन की बातें गुरुजी कैसे जान रहे हैं, जो एक–एक बात का उत्तर देते जा रहे हैं। फिर उन्होंने अपना प्रवचन वकीलों पर, उनकी कार्य शैली पर मोड़कर मुझे पूरी तरह वशीभूत कर लिया। मैं गद्गद् भाव से प्रवचन सुनता रहा। भूल चुका था स्कूटर, जूते, घर पर तैयार बैठी पत्नी तथा पन्द्रह–बीस मिनट में लौटने की बात।

प्रवचन समाप्त होने के पश्चात् भोजन–प्रसाद इत्यादि लेकर मैं शाम को घर पहुंचा लगभग 9 घंटे बाद, पत्नी चिन्तित थी। जब उसे आश्रम की बातें बताई तो वह विस्मित हुए बिना न रह सकीं। तब से निरन्तर सपरिवार आश्रम आना लगा रहता है। हमारी अटूट आस्था इस स्थान के पूज्य गुरुजी के प्रति जागृत हो चुकी है। उस घटना के बाद सैकड़ों छोटे–बड़े अनुभव यहां मिले उनके बारे में फिर कभी लिखूंगा। धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो 'श्री सिद्धदाता आश्रम' में श्री गुरु महाराज के चरणों में है, केवल यहीं है, यहीं है, यहीं है। – "साक्षात् नारायणस्वरूप स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज" पुस्तक से साभार

श्री गुरूजी उवाच:
(चिन्तन खण्ड)

भगवान के लिए हठवादिता

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

उसने ऐसा नियम बनाया है, आप कुछ भी करें, कैसा भी कर्म करें, कहीं भी करें, वह गुप्त नहीं रह सकता है। कोई भी व्यक्ति उस कर्म को छुपाकर नहीं रख सकता है। मानव सांसारिक सम्बन्ध से छुप सकता है, किन्तु उस चित्रगुप्त से अपने कर्मों को छिपाना असंभव है। यह चित्रगुप्त कहीं आकाश-पाताल या स्वर्ग में नहीं है। वह चित्रगुप्त रूपी देवता आपके चित्त में ही बैठा हुआ है, जो नित्य प्रति रील खींच रहा है, कैसेट बना रहा है और जो-जो हम, एक-एक पल, एक-एक क्षण कर रहे हैं, उसकी रील बन रही है। जब वह अच्छे -बुरे कर्मों की रील यमराज के सामने खुलेगी, तो हम कुछ नहीं कर पायेंगे। फिर तो एक ही शब्द कहेंगे कि हे प्रभु, हमें समय नहीं मिला था । वरना हम आपका खूब भजन करते। पर इस बात को वहाँ नहीं माना जाएगा, बे इसे झूठ मानेंगे कि तुझे खाने का टाइम या हँसी विनोद का टाइम था, बाल-बच्चों के लिए टाइम था, दारू पीने का टाइम था, गाली-गलौच का टाइम था, क्या मेरे नाम का ही तुझे टाइम नहीं मिला ?

प्रारब्ध

प्राय: लोग एक प्रश्न करते हैं कि भगवान् ने जन्म दिया है। भगवान् ने ही हमारे कर्म निश्चित किए हैं, इन कर्मों के लिए हमें दोषी ठहराना उचित नहीं है । अनेक प्रकार के तर्क उपस्थित किए जाते हैं। वस्तुत: यह तर्क अहम्वादिता के हैं। मानव स्वभाव अपने दोषों को छिपाने के लिए ईश्वर पर ही आरोप लगा देता है। मैंने कुछ नहीं किया, जो ईश्वर ने चाहा, वही मैंने किया है। यह आरोप भिथ्या है, बुद्धि का कुतर्क है, मन की भ्रान्ति है।

ईश्वर का तो स्पष्ट आदेश है कि विगत जन्म में जो कुछ भी सुकृत्य अथवा कुकृत्य किया है, उसका फल तुझे ही भोगना होगा । कर्म करने के लिए मानव स्वयं स्वतंत्र है । उसे किसी के परामर्श की आवश्यकता नहीं है । विगत जन्मों में जो कुछ किया वही प्रारब्ध है। इस जन्म में जो कुछ भी कर रहा है, वह तेरा संचित कर्म है । संचित कर्मों के फल का निर्णय करने में मानव स्वतंत्र नहीं है । कर्म मानव की स्वतंत्रता है, किन्तु उसकी कर्मभुक्ति ईश्वराधीन है ।

पिछले कर्मों का फल भोगा जाता है, पर अगले कर्म करने के लिए तुझे स्वतंत्र छोड़ा है। तू कैसे दोष लगा सकता है ? कई कह देते हैं कि भगवान ने हमें भजन ही करने दिया, जैसे आजकल कई कह देते हैं कि मैं तो आने को तैयार था, पर गुरु जी, आपने बुलाया नहीं । यह गुरु जी की गलती है, गुरुजी को वायुयान रखने चाहिए कि जब प्रेमी याद करे तो वह वायुयान उसके पास भेज दें । पर यह हमारी मूर्खता है, हमारा यह झूठा बहाना है, हमारा यह झूंठा प्रपंच है। अजी, मैं आ रहा था, पर आपने आने नहीं दिया । यह हमारी मूर्खता के शब्द हैं। यह सच्चाई का शब्द नहीं है। सच्चाई यह है कि जब मानव चित्त में धारण कर लेता है, वह वहाँ पहुँचता ही पहुँचता है। यह सुनिश्चित है। काम करने की जब मानव धारणा बनाता है, काम करता ही है । जब वह सोने की धारणा करता है, वह सोता ही है। खाने की धारणा बनाता है, खाता ही है । पहनने की धारणा बनाता है, वह पहनता ही है। मैं धारणा कर लेता हूँ कि मैं सफेद नहीं, पीली धोती पहनूंगा, पीली धोती पहन लेता हूँ । फिर धारणा बन गई कि पीली नहीं, मैं नारंगी पहनूगा, नारंगी पहन लेता हूँ। और मन में आ गया कि जोगिया पहनूँगा, नारंगी धोती फेंक दी और जोगिया पहन ली । जो मन में आता है, वह मानव अवश्य कर सकता है, बशर्ते मन बनाए, बशर्ते इच्छा उत्पन्न करे, बशर्ते उस ओर ध्यान करे । ध्यान और

सच्चाई यह है कि जब मानव चित्त में धारण कर लेता है, वह वहाँ पहुँचता ही पहुँचता है। यह सुनिश्चित है। काम करने की जब मानव धारणा बनाता है, काम करता ही है । जब वह सोने की धारणा करता है, वह सोता ही है। खाने की धारणा बनाता है, खाता ही है ।

इच्छा दोनों ऐसी प्रबल वस्तु है कि उसको उस जगह पर ले ही जाती है, चाहे लाख अड़चन आयें, चाहे लाख विपरीत परिस्थितियाँ आयें । जाना है, तो जाना ही है । चाहे वह देवी, दुर्गा, गुरु हजार बार रोक लगाएं, पर तुम इतने जिद्दी बन जाओ कि हमको जाना ही है ।

हठधर्मिता

जिद्दी बालक माँ से जो बात चाहे मनवा लेता है। बच्चा जब जिद कर जाता है और कहता है कि मम्मी, मैं दूध नहीं पीऊँगा, मैं कैम्पा पीऊँगा, कहीं से लाकर दे । माँ रात को कैम्पा भी लाकर देती है । फिर कहता है कि मैं कैम्पा नहीं पीता, मैं तो आइसक्रीम खाऊँगा। माँ आइसक्रीम भी लाकर देती है। जिद्दी बच्चा अपनी माँ से हर वस्तु को मनवा लेता है, प्यार और जिद से। अकेली जिद खराब है । प्यार भी हो और जिद भी हो। जिद्दी बच्चा रोता भी रहता है और माँ की गुलगुली भी करता रहता है और जो चाहे मनवा लेता है । अत: मैं आपसे यह कहना चाहूँगा कि आप भीतर से स्वीकार लीजिए। हठवादी

बन जाइये । हठवादिता से बहुत कुछ प्राप्त हो सकता है । हठी शिशु की तरह परमात्मा से कुछ भी माँग सकते हैं, कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि हठवाद के समक्ष परमात्मा भी कि नी हि रहता है। श्रद्धा और हार्दिक प्रेम से परमात्मा के लिए हठी बन जायें । हे प्रभु, आपका ही मार्ग लेना है, चाहे आप कितना भी कष्ट दें। आप चाहे हमें भिखारी बना दें, बीमार कर दें, अथवा और कुछ कर दें। हमने हरि स्मरण के मार्ग को अन्तर्मन से स्वीकार लिया है और यह हमारा दृढ़ हठ है। इस मार्ग पर दृढ़ता से चलेंगे। यही जीवन का लक्ष्य है कि हम परमार्थ स्वरूप को प्राप्त कर लें । ईश्वर से प्रेम करते चलिये। लक्ष्यसे विचलित न होइये, निश्चित रूप से आपको लक्ष्य प्राप्ति होगी। हठवाद के सहारे प्रभु के दर्शन सहज सम्भव है, तुलसीदास ने कहा भी है कि :

सुखी मीन जिमि नीर अगाधा ।
जिमि हरिशरण न एकहुँ वाधा ।। (मानस)

मेरे प्रेमियों, आप जिस मार्ग को स्वीकार रहे हैं, उस मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं । बाधाएं पार कर लक्ष्य तक पहुँचना ही मानव का कर्तव्य है। हिन्दू संस्कृति का एक मात्र उद्देश्य मानव कल्याण है। परिवार के सभी सदस्य कर्तव्य करते हैं किन्तु सभी कामना, ममता, आसक्ति और स्वार्थ के वशीभूत होकर रहते हैं। आपको इन सब बाधाओं को पारकर लक्ष्य की ओर बढ़ना है। यह सत्य है कि पूर्व जन्म के पाप का नाम ही दु:ख, पीड़ा और परेशानी है । ये ही हमारे मार्ग के अवरोध हैं । यही हमें धार्मिक मार्ग में चलने नहीं देते, हमारे मार्ग की बाधाएँ बन जाते हैं। शुभ कर्म से रोकने का प्रयास करते हैं और परमात्मा दर्शन से रोक देते हैं, क्योंकि ये सब पूर्व जन्म कृत पाप हैं। अश्रद्धा, अविश्वास, निद्रा, भय आदि सब पापों के रूप में है । पूर्व जन्म के असद्कर्म अथवा दुष्कर्म पाप के रूप में हमारे साथ रहते हैं और ये शुभ कर्म नहीं करने देते हैं। सन्मार्ग पर नहीं चलने देते हैं। तब हम भला परब्रह्म परमेश्वर तक कैसे पहुँच सकते हैं ?

श्री सुदर्शन संदेश के सदस्य बनें और दूसरों को भी सदस्य बनाएं

'श्री सुदर्शन संदेश' के सदस्य बनकर भगवान श्रीमन् नारायण के लीला चरित्, श्री गुरु महाराज जी के आध्यात्मिक प्रवचन, विचार व अन्य आध्यात्मिक शास्त्रीय जानकारी घर बैठे प्राप्त करें। आपको श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना व समाचार भी निरंतर प्राप्त हो सकेंगे।

एक पत्रिका का मूल्य 15 रूपये है।
वर्ष का मूल्य 180 रूपये बनता है।
लेकिन आप वार्षिक शुल्क केवल 100 रूपये देकर इसके सदस्य बन सकते हैं।

पैकिंग और पोस्टिंग का खर्च भी नहीं लिया जाता है। यह आपको करीब आधे खर्च में घर बैठे प्राप्त होगी।

सम्पर्क करें :

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल-सूरजकुण्ड मार्ग, फरीदाबाद - 121003

दूरभाष **8383821967** नारंग जी
7838169040 प्यारेलाल जी

E-mail shrisidhdataashram.org@gmail.com
website www.sidhdataashram.org
www.sda.org

श्रद्धा और विश्वास

यद्यपि मार्ग में बाधाएँ अवश्य हैं किन्तु लक्ष्य के मार्ग पर चलने की बाधाएँ अपने आप दूर हो जाती हैं। श्रद्धावान् निश्चित ही परम तत्व को प्राप्त होता है । भगवान श्रीकृष्ण ने भी श्रद्धा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है :-

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्पर: संयतेन्द्रिय: ।
ज्ञान लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छाति ।।
(गी. 4/39)

परपात्मा में, गुरुओं में, धर्म में और शास्त्रों में सम्मान पूर्व विश्वास करना ही श्रद्धा मानी जाती है। जब तक ईश्वरत्व का अनुभव न हो, तब तक परमात्मा में प्रत्यक्ष से भी बढ़कर विश्वास होना चाहिए यह विश्वास ही परमात्मा को प्राप्त कराने वाला है । संसार थे प्रतिक्षण व्यतीत हो रहा है, कोई भी क्षण स्थिर नहीं है, केवल परमात्मा की सत्ता से सत्तावान् दिखाई दे रहा है। साधना के मार्ग में बाधाएँ आती ही हैं किन्तु साधक संकल्पशील होकर चलता है, शनै:-शनै: बाधाएँ दूर हो जाती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है। कुछ दिन कठिनाइयाँ अवश्य ही बढ़ेंगी, परेशानियाँ भी अवश्य ही आयेंगी । पूर्व जन्म में हमने जो कर्म किए हैं, उसी का नाम परेशानी है। यही अवरोध है, यही हमें धार्मिक मार्ग पर निरन्तर चलने नहीं देता है। अच्छी जगह जाने से रोकता है । परमात्मा के द्वार पर जाने से रोक दिया । मार्ग में सबसे बड़ा अबरोध ही हमारे पाप हैं । अश्रद्धा, अविश्वास, निद्रा , भय आदि सभी पापों के रूप हैं। ये पूर्व जन्मकृत पाप हमें शुभ कर्मों की ओर नहीं जाने देते हैं, किन्तु जब हठवादिता स्वीकार कर लेंगे । इन पापों को रास्ता आज नहीं तो कल , कल नहीं तो परसों अवश्य देना होगा। हम जो शुभ कर्म कर रहे हैं, प्रभु का स्मरण कर रहे हैं, गुरु वन्दना से कृपापात्र बन रहे हैं, यह पूर्व जन्मकृत पाप अवश्य ही कट जायेंगे । जैसे सूर्य की एक किरण गहन अंधकार में भी प्रकाश पुंज फैला देती है। उसी प्रकार प्रभु स्मरण पापों के मध्य भी साधना का मार्ग अवश्य देगा । यह पाप स्वत: ही परास्त हो जायेंगे, हार जायेंगे ।

मार्ग में सबसे बड़ा अवरोध ही हमारे पाप हैं । अश्रद्धा, अविश्वास, निद्रा , भय आदि सभी पापों के रूप हैं। ये पूर्व जन्मकृत पाप हमें शुभ कर्मों की ओर नहीं जाने देते हैं, किन्तु जब हठवादिता स्वीकार कर लेंगे ।

किन्तु यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है, यह पराजित तब होंगे जब हम हठवादी साधक बन जायेगे। मेरा आपको यही संदेश है, यही उपदेश है । हमें प्रेम मार्ग से हठवादी बन जाना चाहिए। उस परमात्मा की शरणागति के लिए। वह पूछे, हम कह दें कि यह किया है । तेरे नाथ का स्मरण किया है, तेरे नाम पर मैंने सब कुछ लुटाया है, तेरे नाम पर सब कुछ किया है वह पूछे कि लाया क्या है ? तो हम कह देंगे कि ये कर्म लाया हूँ ।

मानव परमात्मा का अंश है। हम इसको मानव क्यों मानें ? हम परमात्मा के अंश हैं।

ईश्वर अंश जीव अविनासी ।
चेतन अमल सहज सुख राशि (मानस)

ममैवांशो जीवलोके जीवभूत; सनातन:

(गी, 15/7)

हठवादिता के संदर्भ में काकभुशुण्डि जी ने कहा है ;

भगति पच्छ हठ हरि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ नर पायउँ देखहुँ भजन प्रताप ।।

(मानस 7)

शरणागत भक्त को कभी कुछ करना शेष नहीं रहता, क्योंकि बह अपना सबब कुछ ईश्वर को समर्पित कर देता है। कठिन से कठिन अवस्था में भी प्रभु का स्मएण नहीं भूलता चाहिए। जो प्रेमी भक्त भगवान के चरणों का अनन्य भाव से भजन करता है, उसके द्वारा यदि अचानक कोई पाप या दुष्कर्म हो जाता है, उसके हृदय में विराजे भगवान उसे सर्वथा नष्ट कर देते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है-

मच्चित्त: सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहडरान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।।

(गीता 18 /58)

अर्थात् मुझे ईश्वर में चित्त वाला होने से तू मेरी कृपा से सम्पूर्ण विघ्न, बाधा, शौक, दु:ख आदि को पार कर जाएगा अर्थात् उनको दूर करने के लिए तुझे कुछ भी प्रयत्न नहीं करना होगा । क्योंकि भगवत भक्त ने ईश्वर को सब कुछ समर्पित कर दिया। समर्पित करने के बाद व्यक्ति का अपना कुछ भी शेष नहीं रहता है, सब कुछ ईश्वर के अधीन हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति के पाप, दुष्कर्म सब कुछ नष्ट हो जाते हैं। भगवान की कृपा से वह सन्मार्ग की ओर प्रेरित होता है। ईश्वर ने स्पष्ट कहा है, कि तुम भिन्न-भिन्न नहीं हो। सब मेरे ही अंश हो । अत: तुम में मैं व्याप्त हूँ। जब तुमने मेरा स्मरण कर लिया, अब तुम्हें किसी प्रकार की बाधा का भय नहीं करना चाहिए।

हमें एक ही ध्यान रखना चाहिए कि बड़े घर का लड़का या लड़की या बहू अपने बड़े घर की इज्जत रखने के लिए ..... **क्रमश: जारी**

गावो विश्वस्य मातर:
गौ समस्त विश्व की मां है।
गौ की सेवा से अनेक तीर्थों का पुण्य फल प्राप्त होता है।

श्री सिद्धदाता आश्रम की गौशाला में सैकड़ों गौएं रहती हैं। यहां अनेक सेवादार गौसेवा कर पुण्य प्राप्त कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति प्रतिदिन चारा आदि का दान करते हैं। आप भी इस पुण्य के भागी बन सकते हैं। यथायोग्य सेवा, चारा, दवाईयां आदि की सेवा आप भी कर सकते हैं। आइये! इस पुण्य कार्य में सहयोग करें।

श्री नारायण गौशाला
फरीदाबाद (हरि.) भारत
संपर्क- राजेंद्र छंगा जी
8860825054

अन्नप्राशन संस्कार

बच्चे को अनाज खिलाने की शुरूआत

श्री सुदर्शन संदेश

हिंदू धर्म में मनुष्य के पैदा होने से मरण तक 16 संस्कार किए जाते हैं। इन सभी का व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्व होता है। अन्नप्राशन वह संस्कार है जब शिशु को पारंपरिक विधियों के साथ पहली बार अनाज खिलाया जाता है। इससे पहले तक शिशु केवल अपनी माता के दूध पर ही निर्भर रहता है। यह संस्कार बेहद महत्वपूर्ण है।

कब और कैसे किया जाता है अन्नप्राशन संस्कार=

जब बालक 6-7 महीने का हो जाता है और पाचनशक्ति प्रबल होने लगती है तब यह संस्कार किया जाता है। शास्त्रों में अन्न को ही जीवन का प्राण बताया गया है। ऐसे में शिशु के लिए इस संस्कार का अधिक महत्व होता है। शिशु को ऐसा अन्न दिया जाना चाहिए जो उसे पचाने में आसानी हो साथ ही भोजन पौष्टिक भी हो।

शुभ मुहूर्त में देवताओं का पूजन करने के पश्चात् माता-पिता समेत घर के बाकी सदस्य सोने या चांदी की शलाका या चम्मच से निम्नलिखित मन्त्र के जाप से बालक को हविष्यान्न (खीर) आदि चटाते हैं। ये मंत्र है:-

शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ।
एतौ यक्ष्मं वि वाधेते एतौ मुञ्चतो अंहस:॥

अर्थात् हे बालक! जौ और चावल तुम्हारे लिये बलदायक तथा पुष्टिकारक हों। क्योंकि ये दोनों वस्तुएं यक्ष्मा-नाशक हैं तथा देवान्न होने से पापनाशक हैं।

इस संस्कार के अन्तर्गत देवों को खाद्य-पदार्थ निवेदित होकर अन्न खिलाने का विधान बताया गया है। अन्न ही मनुष्य का स्वाभाविक भोजन है। उसे भगवान का कृपाप्रसाद समझकर ग्रहण करना चाहिये।

श्री गंगा दशहरा

श्री सुदर्शन संदेश

गंगा दशहरा का हिंदू धर्म में बहुत बड़ा महत्व है। पौराणिक कथाओं का ज्ञान रखने वाले सभी लोगों को यह पता है कि राजा भगीरथ ने अपने पुरखों की आत्माओं को मुक्ति दिलाने के लिए गंगा नदी को धरती पर लाने का श्रेय प्राप्त किया है। कहा जाता है कि जिस दिन मां गंगा धरती पर अवतरित हुईं, वह दिन जेष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि थी।

वहीं, इस दिन आनंद योग और व्यतिपात योग तथा हस्त नक्षत्र जैसे शुभ संयोग भी बने थे। यही वजह है कि गंगा दशहरा के दिन बनने वाले इस संयोग में जब कोई व्यक्ति गंगा स्नान कर प्रभु को याद करता है, और अपने जीवन काल में किए गए सभी अपराधों की क्षमा - प्रार्थना मांगता है, तो इस दिन मनुष्य के सभी अपराधों से उसे मुक्ति मिल जाती है।

गंगा दशहरा क्यों मनाया जाता है

पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा भागीरथ की तपस्या, अथक प्रयास और परिश्रम से इसी दिन गंगा ब्रह्मा जी के कमंडल से निकलकर शिव की जटाओं में विराजमान हुई थी और शिव जी ने अपनी शिखा को खोल कर गंगा को धरती पर जाने की अनुमति दी थी। इसलिए गंगा के धरा अवतरण दिवस को गंगा दशहरा के नाम से जाना जाता है।

गंगा दशहरा का महत्व

हिंदुओं की धार्मिक मान्यता के अनुसार गंगा दशहरा के दिन प्रात: काल गंगा में स्नान करके मां गंगा की आरती करने से समस्त पापों का विनाश हो जाता है। गंगा में स्नान के उपरांत दान का भी विशेष महत्व है।

ऐसी मान्यता है कि गंगा के जल में कभी भी कीड़े नहीं पड़ते और इसका जल प्रदूषित नहीं होता है इसलिए इस जल में स्नान करने से रोगों का विनाश हो जाता है।

गंगा दशहरा के दिन स्नान, ध्यान और तर्पण करने से शरीर शुद्ध और मानसिक विकारों से मुक्त हो जाता है।

अमृत दायिनी मां गंगा के स्पर्श मात्र से ही चराचर जीवों के पापों का अंत हो जाता है और उसे मुक्ति मिल जाती है। गंगा दशहरा के दिन गंगा में जाकर स्नान अवश्य करें। यदि संभव न हो तो आप अपने घर में ही गंगा जल मिलाकर स्नान करें, और योग्य याचकों को दान-दक्षिणा देकर पुण्य प्राप्त करें।

स्नान के बाद ध्यान रहे कि आपको सबसे पहले सूर्य देव को अर्घ्य देना होता है, और इसके बाद ब्राह्मणों और गरीबों को अपनी क्षमता अनुसार दान देना होता है। स्नान के समय आप ओम श्री गंगे नम: का उच्चारण कर सकते हैं।

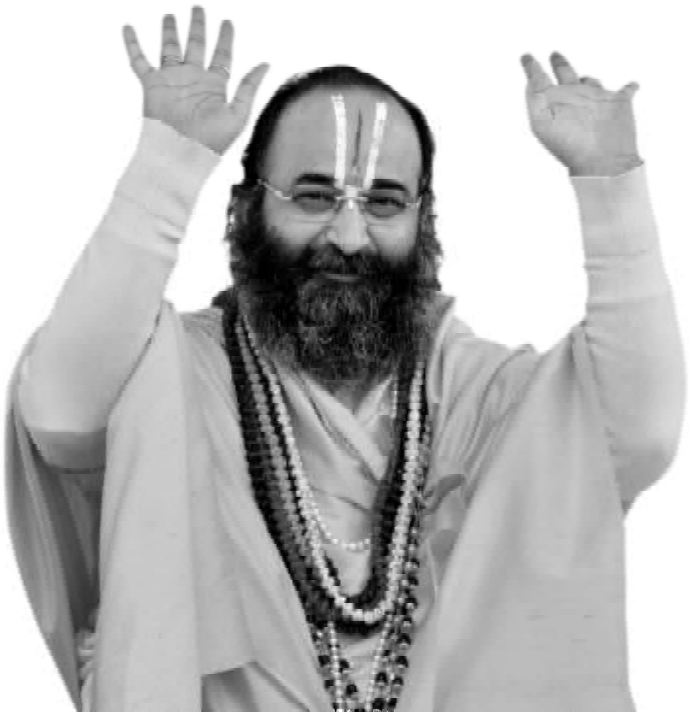

धर्म की रक्षा करते हैं महापुरुष

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

वैकुण्ठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की 15वीं पुण्यतिथि
दिनांक: 22 मई 2022, रविवार

आज हम श्री गुरु महाराज की 15वीं पुण्यतिथि मना रहे हैं। वैसे देखा जाये संत जन का मरण नहीं होता वो अपना कार्य पूरा करके पुन: भगवान की शरण में चले जाते हैं। महापुरुषों का जन्म भी दिव्य होता है और शरीर का त्याग करना भी दिव्य होता है। भगवान ने भी गीता में आया–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।4.8।

भगवान महापुरुषों को समय समय पर धर्म की रक्षा करने लोगों का कल्याण करने, उनकों सदमार्ग दिखाने के लिये संतो को इस धरा पर भेजते हैं। श्री गुरु महाराज ने इस श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण

दिव्यधाम की स्थापना की। श्री गुरु महाराज ने अपने जीवन काल में अनेकों नेक जीवों का कल्याण किया। उन्होंने लोगों को सदमार्ग पर लगाया। उन्होंने अपने प्रवचनों में मानवता, सेवा, शरणागति पर विशेष जोर दिया। हजारों लोगों को दीक्षा देकर उनका कल्याण किया। उन्होंने इस स्थान को ऐसा दिव्य स्थान बना दिया जहां पर लोगों को आकार शांति मिलती है और भाव के अनुसार उनकी मनोकामना भी पूर्ण होती है। श्री गुरु महाराज हर जगह विराजमान हैं, वो स्थान में भी विराजमान हैं, मूर्ति में भी विराजमान हैं, ध्यान में भी विराजमान हैं और भाव में भी विराजमान हैं वो हर जगह देखे जा सकते हैं। गुरु के वचनों पर जो विश्वास करता है उनकी वाणी पर जो विश्वास करता है वाणी पर जो अमल करता है वही सच्चा गुरु भक्त है।

संत का मार्ग धर्म की पौड़ी
कोउ बड़ भागी पावे

संतों के यहां देर नहीं होती, भगवान देर कर सकते हैं पर संत नहीं। संत, गुरुजन भगवान के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिये आते है। आज हम श्री गुरु महाराज को अर्चावतार के रूप में मान रहे हैं। जैसे भगवान के चार अवतार हैं-

व्यू अवतार, विभव अवतार, परा अवता, अर्चावतार

श्री गुरु महाराज हमारे बीच ही विद्वमान हैं। गुरु महाराज शरीर नहीं गुरु तत्व हैं। वो हमारे साथ थे, हमारे साथ हैं और हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

परमात्मा से जोड़ देने वाला विषाद भी योग हो सकता है, कर्म भी योग हो सकता है, भक्ति भी योग हो सकती है, ज्ञान भी योग हो सकता है तो भगवान से जोड़ देने वाली सेवा भी योग हो सकती है। इसका नाम सेवा है।

अब प्रश्न यह है सेवा व्यक्ति के मन को भगवान की सेवा में कैसे जोड़े?

भगवान श्री राम ने यह संदेश दिया-

श्री हनुमान जी से प्रभु ने कहा- हनुमान जी जानते हो मेरा अनन्य सेवक कौन है? हनुमान जी ने कहा प्रभु आप ही समझाईये। प्रभु ने कहा कि जिसकी जिसके मन मे निश्चय हो कभी टरे नहीं!

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत॥3॥

मैं तो सेवक हूँ और जिनकी सेवा कर रहा हूं वे चर-अचर जितने भी प्राणी हैं ये सब मेरे परमात्मा के स्वरूप हैं।

हम जिसकी सेवा करे यदि उसमें भगवान दिखाई दे तो सेवा भी भगवान से जोडने वाली हो जाती है। तह सेवा योग बन जाती है। अगर हम जिनकी सेवा कर रहे हैं उसको दीन समझकर सेवा कर रहे हैं, दुखी समझकर सेवा कर रहे हैं तो सेवा धर्म बन जाती है। माता-पिता की सेवा करते हैं तो सेवा कर्त्वय बन जाती है, भगवान के भाव से यदि सेवा की जाती है तो वह सेवा योग है और वो सेवा भगवान से मिला देती है। माता-पिता में भगवान देखकर सेवा की जाये तो वह योग बन जाती है।

एक महात्म थे, बहुत मस्ती में आनंद में बैठे-किसी ने कहा- महाराज क्या कर रहे हो? बोले भजन कर रहे हैं। भजन? आसन भी नहीं लगाये हो, आंखे भी नहीं मूंदे हो, माला भी नहीं है। महात्मा बोले- इसिलिये तो भजन कर रहे हैं। ये कौन सा भजन है महाराज। महात्मा मुसकुराकर बोले- जितने भी आते-जाते प्राणी दिखाई दे रहे है

खुदा ऐ खलक - यह ईश्वर का बनाया हुआ संसार
खादी ऐ खलक - सारी मेरी तस्वीर के दाने हैं, नजर में फिरते रहते हैं। इबादत होती रहती है। ऐसी दृष्टि होनी चाहिये।

सेवा करने से यह भी होता है व्यक्ति का मन अभिमान से भर जाता है और सेवा करने वाले कभी-कभी यह भी कहते हैं कि पूछो इनसे हमने इनकी कैसी सेवा की? सेवा करने वाले का मन अभिमान से भरा रह सकता है।

इसलिये वो कभी नहीं भूलते कि हम सेवक हैं? पर सेवा करने वाले का मन भगवान से भी भरा रह सकता है। यदि सेवा करने वाले व्यक्ति को देखेंगे तो मन अभिमान से भर जायेगा। यदि सेवा करने वाला व्यक्ति जिसकी सेवा कर रहा है उसमें भगवान को देखेगा तो भगवान से भर जायेगा। तब सेवा योग बन जाती है।

रामचरित मानस में एक उदहारण है।

चित्रकूट में अवध निवासी श्री भरत जी के साथ भगवान। वहां रहने वाले कौल भील कंदमूल फल लेकर आये! सेवा कर रहे हैं। यह स्वीकार कर लें। स्वीकार तो कर लेंगे पर इसका मूल्य लेना पड़ेगा। कौल भील बोले हमें मूल्य नहीं चाहिये। अवध वासियों ने समझा कि मूल्य कम है। वे अवध वासी ज्यादा कीमत देत हैं तो अपने कंदमूल फल वापिस ले जाओ! बोले तुम्हें रामजी की सौगंध है अगर तुमने कंदमूल फल वापिस करोगे। ये इतनी सेवा क्यों कर रहे हैं? दूसरा होता तो यह सोचता कि एक तो हम तुम्हारी खाने-पीने की व्यवस्था कर रहे हैं नहीं तो भूखे ही बैठे रहोगे। यह भी कह सकते थे। कौल भील कहते हैं- अगर तुम यह कंद मूल फल स्वीकार कर लोगे तो हम कृतार्थ हो जाऐगें। हमको धन्य करने के लिये यह फल स्वीकार कर लें। यह है सेवा योग। जब सेवा करने से यह नहीं लगे कि हम जिसकी सेवा कर रहे हैं उस पर हमारी कृपा है

बल्कि ऐसा लगे सेवा स्वीकार कर रहा है। उसकी हम पर कृपा है। तब सेवा योग बनता है। जब ऐसा लगे कि भगवान ही इस रूप में सेवा स्वीकार कर रहे हैं।

वृद्धा के रूप में, रोगी के रूप में, माता-पिता के रूप में, गुरु के रूप में, भेट के रूप में।

भगवान को आवश्यकता नहीं है किन्तु हमारा जीवन धन्य करने के लिये विभिन्न रूप में हमारी सेवा सवीकार करते हैं।

दरिद्र में भी नारायणा हैं। इसलिये उनका नाम दरिद्र नारायण पड़ा पर हमें नारायण भी दरिद्र दिखाई देता है। रोगी के रूप में भगवान ही आये हैं, वृद्धा के रूप में भगवान ही आये हैं और जब मन भगवान से भर जाये तो फिर सेवा होती है तब सेवा योग है। हनुमान जी और भरत जी ये दोनों आदर्श हैं। भरत जी सदगृहस्त है। हनुमान जी बाल ब्रह्मचारी हैं-संत हैं। लेकिन भगवान राम जब जब हनुमान जी को देखते हैं तब-तब उन्हें भरत जी याद आ जाते हैं।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

भरत जी सदगृहस्थ है और हनुमान जी ब्रह्मचारी विरक्त है और भगवान दोनों को समान रूप से देखते हैं। एक बात और है सद्गृहस्थ काम काज से!

भरत जी जुड़े हैं राज काज से। हनुमान जी हनुमन जी से मेनाक पर्वत ने कहा- थोडी देर ठहर जाओं, विश्राम कर लो। हनुमान जी बोले-

हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम

भरत जी प्रवति में दिखाई देते हैं और हनुमान जी नवृति में दिखाई देते हैं लेकिन समान वलो हैं दोनों। भरत जी भले ही राज काज में रहे पर- भरत हृदय सीय राम निवासू

भरत जी के हृदय में कौन बैठे हैं? सीताराम और हनुमान जी के हृदय में कौन बैठे हैं

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।

जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥17॥

भावार्थ- मैं पवनकुमार श्री हनुमानजी को प्रणाम करता हूँ, जो दुष्ट रूपी वन को भस्म करने के लिए अग्निरूप हैं, जो ज्ञान की घनमूर्ति हैं और जिनके हृदय रूपी भवन में -बाण धारण किए श्री रामजी निवास करते हैं॥17॥

हनुमान जी के हृदय में भी सीता राम जी।

तुलसी दास जी महाराज कहते हैं-

अगर गृहस्थ होकर सेवा करें तो सेवा योग बन सकती है। आप विरक्त होकर सेवा करें तो भी सेवा योग बन सकती है। पर शर्त यह है, चाहे गृहस्थ हो, चाहे विरक्त हो उसका मन भगवान से भरा है तो प्रवृति मार्ग भी योग है और निवृति मार्ग भी योग है। वह चाहे राम काज में रहे या रामकाज में रहे।

एक अद्भुद बात है। हनुमान जी रामकाज करते हैं क्या समझकर करते हैं! सेवा समझकर। हनुमान जी रामजी के बाण बन गये हनुमान जी, भरत जी दोनों में सेवक के लक्षण देखे ।

रामजी के बाण बनकर चले। बाण को चलते तो देखा पर बाण के पांव देखे हैं आपने? पांव नहीं है पर चलता है। बिना पांव के चलता है। किसी के घर पर जाये तो पूछते हैं कि क्या चलेगा? चाय चलेगी या गर्म चलेगा या ठंडा?

लोग बता देते हैं। और एक आदमी तो बड़ा विचित्र था उससे पूछा क्या चलेगा? दूध या चाय। वो भी कम विचित्र नहीं था बोला जब तक चाय बने तब तक दोनों ही चलेगा। उसे दोनो ही चलेगा।

हमारे परम आचार्य भगवान शेषावतार रामानुज स्वामी जी ने भी यही कहा–

कैंकर्य लक्षण विलक्षण मोक्ष भाजये

जैसे श्रीमद् भागवत में प्रहलाद जी ने नवदा भगति का वर्णन किया।

पहली है भगवान के नाम गुण लीला का श्रवण–कीर्तन, उनका स्मरण, चरण सेवा, पूजा–अर्चना, वंदन, दास्य साख्यम और आत्म निवेदन। नवदा भक्ति से भगवान प्रसन्न होते हैं।

ऐसे ही हमें गुरु के प्रति भक्ति भाव रखना चाहियें। क्योंकि गुरु भगवान में कोई अंतर नहीं है।

रामायण में भगवान ने शबरी को नवदा भक्ति में कहा–

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।
गुरु पद पकंज सेवा तीसरि भगति अमान।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा।
मोतें संत अधिक करि लेखा।।

यहां पर भी भगवान श्रीराम ने गुरु का महत्व बताया। संत अपने लिये कुछ नहीं करते परहित के लिये करते हैं।

परहित सरिस धर्म नहीं भाई
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई
दया धर्म का मूल है,पाप मूल अभिमान
तुलसी दया ना छाडिये, तब लग घट में प्राण।

प.पू. श्री गुरू महाराज जी के दर्शन लाभ कैसे लें...

प्रतिदिन दोपहर 12 बजे
सतसंग भवन में
मंगलवार, शनिवार एवं रविवार
सायं 7.30 बजे मंदिर में
प्रत्येक गुरूवार
सायं 7.30 बजे समाधि स्थलपर

भगवान का वामन अवतार

श्री सुदर्शन संदेश

वामन विष्णु के अवतार और बारह आदित्य भाइयों में बारहवें और सबसे छोटे थे। त्रेतायुग के प्रारंभ होने में भगवान विष्णु ने वामन रूप में देवी अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए। इसके साथ ही यह विष्णु के पहले ऐसे अवतार थे जो मानव रूप में प्रकट हुए — बालक रूपी ब्राह्मण अवतार। इनको दक्षिण भारत में उपेन्द्र के नाम से भी जाना जाता है। इनके पिता महर्षि कश्यप थे तथा माता अदिति थीं। सूर्यनारायण, इंद्रदेव, वरुणदेव, मित्र, अंशुमान्, पूषा सहित अन्य आदित्य थे। इनका मूल नाम उपेन्द्र था।

महर्षि कश्यप ऋषियों के साथ उनका उपनयन संस्कार करते हैं। वामन बटुक को महर्षि पुलह ने

यज्ञोपवीत, अगस्त्य ने मृगचर्म, मरीचि ने पलाश का दंड, आंगिरस ने वस्त्र, सूर्य ने छत्र, भृगु ने खड़ाऊं, गुरु देव ने जनेऊ तथा कमंडल, माता अदिति ने कोपीन, सरस्वती ने रुद्राक्ष की माला तथा कुबेर ने भिक्षा पात्र प्रदान किए। तत्पश्चात भगवान वामन पिता से आज्ञा लेकर बलि के पास जाते हैं। उस समय राजा बलि नर्मदा के उत्तर-तट पर अंतिम यज्ञ कर रहे होते हैं।

एक बौने ब्राह्मण के वेष में बली के पास पहुंचे और उनसे अपने रहने के लिए तीन कदम के बराबर भूमि देने का आग्रह किया। उनके हाथ में एक लकड़ी का छाता था। गुरु शुक्राचार्य के चेताने के बावजूद बली ने वामन को वचन दे डाला।

वामन ने अपना आकार इतना बढ़ा लिया कि पहले ही कदम में पूरा भूलोक (पृथ्वी) नाप लिया। दूसरे कदम में देवलोक नाप लिया। इसके पश्चात् ब्रह्मा ने अपने कमण्डल के जल से वामन के पाँव धोये। इसी जल से गंगा उत्पन्न हुयीं। तीसरे कदम के लिए कोई भूमि बची ही नहीं। वचन के पक्के बली ने तब वामन को तीसरा कदम रखने के लिए अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। वामन बली की वचनबद्धता से अति प्रसन्न हुये। चूँकि बली के दादा प्रह्लाद विष्णु के परम् भक्त थे, वामन (विष्णु) ने बाली को पाताल लोक देने का निश्चय किया और अपना तीसरा कदम बाली के सिर में रखा जिसके फलस्वरूप बली पाताल लोक में पहुँच गये।

भागवत कथा के अनुसार विष्णु ने इन्द्र का देवलोक में अधिकार पुनः स्थापित करने के लिए यह अवतार लिया। देवलोक असुरराज दैत्य बली ने हड़प लिया था। बली विरोचन के पुत्र तथा प्रह्लाद के पौत्र थे और एक दयालु असुर राजा के रूप में जाने जाते थे। यह भी कहा जाता है कि अपनी तपस्या तथा ताक़त के माध्यम से बली ने त्रिलोक पर आधिपत्य हासिल कर लिया था।

एक और कथा के अनुसार वामन ने बली के सिर पर अपना पैर रखकर उनको अमरत्व प्रदान कर दिया। विष्णु अपने विराट रूप में प्रकट हुये और राजा को महाबली की उपाधि प्रदान की क्योंकि बली ने अपनी धर्मपरायणता तथा वचनबद्धता के कारण अपने आप को महात्मा साबित कर दिया था। विष्णु ने महाबली को आध्यात्मिक आकाश जाने की अनुमति दे दी जहाँ उनका अपने सद्गुणी दादा प्रहलाद तथा अन्य दैवीय आत्माओं से मिलना हुआ।

वामनावतार के रूप में विष्णु ने बलि को यह पाठ दिया कि दंभ तथा अहंकार से जीवन में कुछ हासिल नहीं होता है और यह भी कि धन-सम्पदा क्षणभंगुर होती है। ऐसा माना जाता है कि विष्णु के दिये वरदान के कारण प्रति वर्ष बली धरती पर अवतरित होते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी प्रजा खुशहाल है।

सिद्धदाता आश्रम को जानें

सिद्ध शक्तियां महसूस होती हैं यहां

यहां सूरजकुंड-बड़खल मार्ग स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम (श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम) मानवता सिखाने की प्रशिक्षणशाला बन चुका है। यहां आने वाले भक्तों को सिद्धों की शक्ति महासूस होती है। यही कारण है कि आज यहां करीब ३० देशों से धर्मावलंबी चले आते हैं।

माना जाता है कि यहां जो जिस भाव से आता है उसे उसी प्रकार अनुभूतियों की प्राप्ति होती है। माना जाता है कि वर्ष 1989 में आश्रम निर्माण प्रारंभ करते समय ही इसके अधिष्ठाता वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने अपने शिष्यों से कह दिया था कि यहां पर अनंत काल तक आने वालों की समस्त इच्छाएं पूर्ण होंगी।

ऐसा माना जाता है कि आश्रम में लोगों को आधि व्याधियों से भी सहज ही मुक्ति प्राप्त होती है। यहां पर मंगलवार और शनिवार को इसके लिए भी हजारों लोग पहुंचते हैं जहां मेंहदीपुर बालाजी मंदिर जैसी सब क्रियाएं सहज ही देखी जा सकती हैं। कहते हैं कि कुछ ही हाजिरी देने से लोगों को इन व्याधियों से आजादी मिल जाती है और वह निरोग हो अपने सहज जीवन को जीता है।

फरीदाबाद का अरावली क्षेत्र, जहां श्री सिद्धदाता आश्रम स्थित है, वास्तव में ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है। अरावली श्रृंखला का यह स्थान महर्षि पाराशर व उनके पुत्र महर्षि वेदव्यास से जुड़ा रहा है। जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण भी यहां देखने को मिलते हैं। निरंतर गुरु शिष्य परंपरान्तर्गत यहां रह रहे साधु-सन्त इसकी गवाही देते हैं।

दिल्ली फरीदाबाद की सीमा से सटा यह क्षेत्र अपने धार्मिक स्थानों के चलते धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी सहज आकर्षित करता है। यह वह स्थान है जहां वनवास के दौरान पांडु के पांचों पुत्रों सहित माता कुन्ती

ने घोर तप किया था। इस तप के फलस्वरूप ही पांडवों को असीमित शक्तियों की प्राप्ति हुई थी।

शास्त्रों के अनुसार जहां पर कोई पवित्र नदी, जंगल व आदि शक्ति का निवास हो वह क्षेत्र धर्म क्षेत्र कहलाता है और वहां आने वालों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति बिना विशेष प्रयास किए ही हो जाती है। इस कसौटी पर श्री सिद्धदाता आश्रम खरा उतरता है क्योंकि इतिहास के जानकारों से पता चलता है कि कभी जमुना का बहाव इधर से ही होता था। अरण्य (जंगल) तो यहां है ही साथ ही महर्षि पाराशर द्वारा पूजित शक्ति के स्वरूप भी यहां स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं।

ऐसे तीर्थ क्षेत्रों के बारे में कहा जाता है-

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं तीर्थ क्षेत्रे विनश्यति।

- अर्थात् अन्य जगह पर किए हुए पाप तीर्थ क्षेत्र में जाने से छूट जाते हैं।

कहा जाता है कि जहां अब श्री सिद्धदाता आश्रम है, वहां हर युग में दिव्य ऋषियों ने दिव्य धाम की स्थापना की हैं। जब गुरु महाराज ने इस स्थान को धर्म केंद्र के रूप में पुनर्स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया। यहां खुदाई के दौरान पूजा केंद्र के अवशेष मिले। जिनमें से एक प्राचीन धूना भी मिला। श्री गुरु महाराज ने भी इसी धूने पर बैठकर असंख्य लोगों को मुक्ति की राह दिखाई है। यह धूना आज भी यहां मौजूद है। यह धूना भी साबित करता है कि यह स्थान सनातन काल से पूजन, अर्चन के साथ-साथ आस्था, धर्म और विश्वास का केंद्र रहा है। किसी गुरुभक्त के पूछने पर गुरु महाराज ने भी बताया था कि इस स्थान का तीसरी बार उद्धार हो रहा है। यहां हर युग में दिव्य स्थान की स्थापना होती है।

श्री गुरु महाराज ने 1989 में इस स्थान की पुनर्स्थापना की और भक्ति की जो लौ जलाई उसमें दिनोंदिन प्रगति करते हुए इस स्थान को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया।

इस मन्दिर में श्री लक्ष्मीनारायण भगवान, श्री राधाकृष्ण, श्री लक्ष्मी नृसिंह, श्री राम दरबार, श्री माता जी, श्री शिव परिवार, गणपतिजी, श्री हनुमानजी, श्री सरस्वतीजी, जगद्गुरु रामानुजाचार्य जी महाराज व श्री गुरु महाराज स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज के सुन्दर जीवन्त विग्रह देखने को मिलते हैं। जैसे वह हमें ही देखते हुए मुस्कुरा रहे हों। इस स्थान की स्थापत्य कला भी विशुद्ध रूप से वैष्णव धर्म के अनुसार है। जिसें अंत:पुर से लेकर गौरपुरम तक स्पष्ट देखा जा सकता है। रामानुज संप्रदाय में जगद्गुरु की उपाधि से अलंकृत गुरु महाराज ने कभी किसी कट्टरता को आश्रय नहीं दिया। जिसे प्राय: सभी धर्मों, संप्रदायों और पंथों में उनको समान आदर भाव प्राप्त है।

गुरु महाराज: हम इस स्थान के पुनर्स्थापना करने वाले गुरु महाराज के बारे में भी थोड़ा जानना ठीक रहेगा। राजस्थान के सवाई माधेपुर जिला अन्तर्गत पाडला गांव में एक कुलीन जमींदार ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने वाले बाबा बचपन से ही एकांतवासी थे। वह वन-उपवन में निकल जाते और घण्टों साधना करते के बाद लौटते। वह निरंतर संतों के सम्पर्क में रहते। श्री गुरु महाराज की भक्ति की राह को कोई लौकिक घटना कभी अवरूद्ध नहीं कर पाई। चाहे वह जंगल के हिंसक पशु रहे हों, पथरीली राहें रही हों अथवा शून्य से भी नीचे रहा तापमान।

वर्ष 2007 में उन्होंने अपना शरीर पूरा कर लिया लेकिन उनके शिष्य कहते हैं वह अभी भी यहीं हैं। वह पोषक हैं, रक्षक हैं और सृजक भी हैं। हजारों-लाखों लोगों की दुख तकलीफें को दूर करने वाले श्री गुरु महाराज ने भक्तों को भौतिक सुख-साधन भी आशीर्वाद में बांटे हैं। जो-जो जिस भाव से यहां उनकी शरणाई लेता है, वह सब कुछ पा जाता है।

वह सभी को मानवता, प्रेम, भजन, सेवा और शरणागति की शिक्षा देते थे। उनके बाद गद्दीनशीन हुए जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज कहते हैं- प्रेम भगति जल बिनु रघुराई। अभिअंतर मल कबहुँ न जाई।।

अर्थात् भक्ति के बिना भीतर का सूक्ष्म मल (अहम्) नहीं मिटता। जिससे विद्वानों के उपदेशों पर मन टिकता ही नहीं। इसलिए सलाह दी गई है कि यह सूक्ष्म मल केवल और केवल भक्ति से ही हटाना चाहिए।

बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, लेखक, पत्रकार, अधिकारी, उद्योगपति, गरीब-अमीर यहां आते हैं और सभी यहां कृपा का प्रसाद प्राप्त करने आते हैं। महाराजश्री कहते हैं कि यहां सभी को भावानुकूल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति होती है।

स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में आश्रम द्वारा समाज उपयोगी अनेक कार्य संचालित किए जा रहे हैं जिसमें पर्यावरण सुरक्षा के लिए बड़ी संख्या में पौधारोपण, सभी को स्वास्थ्य के लिए डिसपेंसरी व मेडिकल कैंप, सभी के लिए दोनों समय का भोजन, आध्यात्मिक वचन, यज्ञ, शिक्षा के लिए निशुल्क संस्कृत महाविद्यालय, 300 गौओं वाली गौशाला आदि अनेक कार्य निष्पादित किए जा रहे हैं।

।। श्री गुरूहरिः ।।

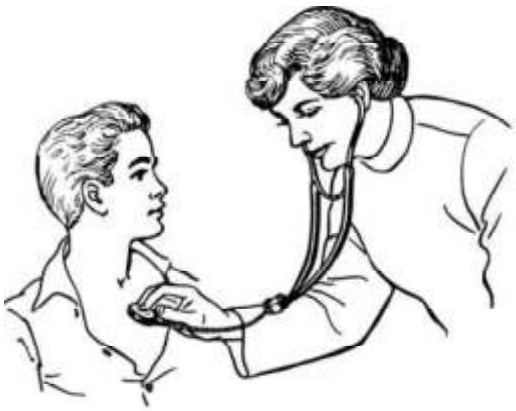

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
(श्री सिद्धदाता आश्रम)

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा

संचालित **चिकित्सा शिविर**

प्रत्येक रविवार प्रातः नौ बजे से
उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरु महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

श्री रामानुज संप्रदाय– आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

गत अंक से जारी

अध्याय 4

पेरिय, आण्डाल और तोंडरडिप्पोडि आलवार

ज्येष्ठे स्वातीभवं विष्णुरथांशं धन्विन: पुरे।
प्रपद्ये श्वशुरं विष्णो: विष्णुचित्तं पुर:शिखमृद्ध।।9

मैं उन सर्वजनशिरोमणि भक्तश्रेष्ठ विष्णुचित्त की शरण लेता हूं जो ज्येष्ठ मास के स्वाति नक्षत्र में धन्विन:पुर श्री विल्लिपुत्तुर नगर में विष्णु के रथांश से पैदा हुए और जो विष्णु के श्वशुर के रूप में विख्यात हैं।

इन महापुरुष की कन्या का नाम आण्डाल था। आण्डाल बाल्यकाल से ही विष्णु की सेवा में लगी रहतीं और कहतीं कि वे नारायण के अतिरिक्त अन्य किसी के साथ विवाह नहीं करेंगी। वयस्क होने पर पिता उनके विवाह के लिए चिन्तित हुए, परन्तु उनके नारायण को ही वरण करने का संकल्प जानकर, पिता किंकर्त्तव्यविमूढ़ हुए और नारायण का ध्यान करने लगे। कहते हैं कि उसी रात स्वप्न में स्वयं विष्णु ने ही उन्हें अभय देते हुए कहा था– अपनी कन्यारत्न मुझे देने में संकोच मत करना। ये साक्षात् लक्ष्मी हैं। उसी रात श्रीविष्णु मन्दिर के पुजारी को भी स्वप्न में आदेश मिला– कल प्रात: काल तुम विवाहोपयोगी समस्त सामग्री लेकर आण्डाल के पिता के घर जाना और आण्डाल को सुन्दर वेशभूषा में सज्जित करके पालकी में मेरे मन्दिर ले आना। पुजारी ने ऐसा ही किया। जब आण्डाल के पिता को यह शुभ संवाद मिला, तो उनके आनन्द की सीमा न रही। आण्डाल पालकी में बैठकर श्री पुरुषोत्तम के साथ विवाह करने चली। उनके पीछे पीछे असंख्य लोग भी गए। उनके मन्दिर में प्रवेश करने पर नारायण ने हाथ बढ़ाकर उन्हें ग्रहण तथा आलिंगन किया। उस आलिंगन से आण्डाल द्रवीभूत होकर श्रीविग्रह के साथ एकीभूत हो गई। उन्हें और कोई देख नहीं सका।

उनके पिता को चिन्तित देखकर श्री पुरुषोत्तम ने मन्द हास्य के साथ कहा- आज से आप मेरे श्वशुर हुए। आप घर लौट जाएं। आपकी कन्या सर्वदा मुझमें ही रहेगी। आण्डाल के पिता हर्षोत्फुल्ल चित्त तथा रोमांचित शरीर के साथ सर्वजीवों के पालनकर्ता परमपुरुष विष्णु को बारम्बार साष्टांग वन्दना करने के बाद घर लौट आए। उसी दिन से वे पेरिय आलवार अर्थात् सर्वश्रेष्ठ भक्त के नाम से विख्यात हो गए। उनका जन्म ईसापूर्व सन् 3056 में हुआ था।

आषाढ़े पूर्वफल्गुन्यां तुलसी काननोद्भवाम्।
पाण्डये विश्वम्भरां गोदां वन्दे श्रीरंगनायिकाम्।।10

आषाढ मास के पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में पाण्डयदेश में स्थित तुलसीकानन में जिनका जन्म हुआ, जो विश्वजननी लक्ष्मी की मूर्तिविशेष हैं, साक्षात् वागदेवी होने के कारण वाग्विन्यास में निपुण हैं, मैं उनक श्रीरंगनाथ की महिषी आण्डाल की वन्दना करता हूं।

श्री लक्ष्मीदेवी ने स्वयं को तीन मूर्तियों में विभाजित किया है। श्रीदेवी उनका प्रथम रूप है। ये विष्णु की वक्षस्थल विलासिनी हैं। भूदेवी उनका दूसरा रूप है। ये श्रीमन्नारायण की दृष्टि रूप विलासक्षेत्र हैं। नीलादेवी इनका तीसरा रूप है। इस रूप में वे नारायण के माधुर्य तथा महिमादि का कीर्तन करके और हरिप्रेम रूपी मदिरा पान कर निरन्तर विह्वल तथा उन्मत्त हो स्वयं को कृतार्थ मानती हैं। ये नीलादेवी ही आण्डाल के रूप में अवतीर्ण हुई थीं।

कहते हैं कि एक बार पेरिय आलवार श्री विष्णु के सेवार्थ तुलसी चुनने अपने तुलसी कानन में गए। तुलसी चयन करते करते सहसा एक परम सुन्दरी, स्मितविकसित आनना, चंचल छोटी सी बालिका को भूमि पर लेटे देखकर उनके हृदय में विस्मय तथा प्रगाढ़ वात्सल्य का संचार हुआ। वे निसन्तान थे। उन्होंने कन्या रत्न पाकर स्वयं को कृतार्थ माना। बालिका में शैशव काल से ही नारायण के प्रति स्वाभाविक प्रीति दीख पड़ी। उन्हें अन्य बालक बालिकाओं के साथ खेलना पसन्त न था। वे देवमन्दिर के सम्मुख बैठकर स्वागत में न जाने क्या क्या कहतीं, कभी हंसतीं, तो कभी श्रीविग्रह के प्रति नाराज होकर अभिमानपूर्वक रोते हुए आकुल हो उठतीं और सान्त्वना देने पर परम आनन्द के साथ ताली बजाते हुए नृत्य करतीं। कभी, किसी के न रहने पर, वे देवालय में प्रविष्ट होकर नारायण के लिए चढ़ाई हुई माला अपने गले में धारण करतीं और वापिस रख देतीं। यही उनका खेल था। एक बार उनके पिता ने देखा कि आण्डाल ने श्रीविष्णु के लिए बनी तुलसी माला को अपने गले में धारण कर लिया है। यह देखकर उन्होंने बालिका का तिरस्कार किया। **अगले अंक में जारी...**

जय श्रीमन्नारायण !!
श्री सिद्धदाता आश्रम अब आपके
instagram पर भी!
श्री सिद्धदाता आश्रम की गतिविधियां एवं आने वाले कार्यक्रमों की सूचनाएं प्राप्त करने लिए इंस्टाग्राम पर सर्च करें #shrisidhdataashram
या नीचे दिए लिंक को टाइप कर सीधे हमारे इंस्टाग्राम पेज पर जाएं:-
https://www.instagram.com/shrisidhdataashram/

रामानुज के गुरू यादवप्रकाश

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

...गत अंक से जारी

तदुपरान्त वे कुछ दिन श्री पेरम्बुदुर में जाकर रहे, मगर उनकी माता तथा उन्हें वहां शान्ति न मिलने पर उन्होंने कांचीपुर जाने का निश्चय किया। तदनुसार रामानुज ने उक्त नगरी में उक मकान का निर्माण कराया और सपरिवार वहीं जाकर निवास करने लगे। कालक्रम से उनका शोकवेद शान्त हुआ।

उन दिनों कांची नगरी में यादवप्रकाश नामक एक सुविख्यात अद्वैतवादी आचार्य अपने अनेक शिष्यों के साथ निवास करते थे। उनके पाण्डित्य पर सभी मुग्ध हो जाते। अदम्य विविदिषा (ज्ञानपिपासा) के कारण रामानुज भी शीघ्र उन्हीं के शिष्य हो गए। नए शिष्य का रूप लावण्य तथा मुखमण्डल पर प्रतिभा की छाप देखकर यादवप्रकाश बड़े ही प्रसन्न हुए। अति अल्प काल में ही रामानुज उनके प्रधान शिष्य के रूप में परिगणित होने लगे और उनके अतिशय प्रीतिभाजन हुए।

परन्तु यह प्रीति अधिक काल नहीं टिक सकी। यादवप्रकाश अद्वितीय प्रतिभाशाली थे। उनके द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद आज भी यादवीय सिद्धान्त के नाम से विख्यात है। वे एक प्रकार के शुद्धाद्वैतवादी थे, परन्तु ईश्वर का साकार रूप नहीं मानते थे। उनके मतानुसार जगत् ईश्वर की परिवर्तनशील, नित्य नश्वर विराट मूर्ति है। इसके पीछे जो देश काल निमित्त से अतीत, अक्षर सच्चिदानन्द सत्ता है, वही उसकी स्वराट् सत्ता है और वही स्वीकार करने तथा जानने के योग्य है। पूज्यपाद शंकराचार्य के समान वे विराट् को माया अथवा रज्जु को सर्प का विवर्त, एक में अन्य का बोध नहीं कहते थे। जगत् उनकी दृष्टि में मरीचिका के समान निराधार तथा पूर्णतः महत्वहीन नहीं, बल्कि ईश्वर का ही एक नित्य परिवर्तनशील स्वरूप लगता था। सतत अस्थिर होने के कारण ही यह हेय है तथा सतत स्थिर होने के कारण स्वराट् स्वरूप ग्रहणीय है। विराट्दर्शी आत्मा जीव है और स्वराट् आत्मा ही ब्रह्म है।

अगले अंक में जारी

1

श्री सिद्धदाता आश्रम में ब्रह्मोत्सवम्

श्री सिद्धदाता आश्रम में आयोजित पांच दिवसीय ब्रह्मोत्सव में 1- शोभायात्रा को अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी के राजनैतिक सचिव श्री अजय गौड़ जी, विधायक श्रीमती सीमा त्रिखा जी प्रारम्भ करवाते हुए। 2- ब्रह्मोत्सव की विधियों की एक झलक, 3- शोभायात्रा में विराजित भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी 4 - भक्तों को प्रवचन कहते श्री गुरु महाराज जी 5- ब्रह्मोत्सव के अवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित जनसमूह और 6- शोभायात्रा में कलश के साथ सम्मिलित हुई महिलाएं दिव्यधाम में प्रसाद आशीर्वाद के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा में।

2

3

4

5

6

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/22-24
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 1st & 2nd day of every month

वैकुंठवासी गुरू महाराज की पुण्यतिथि पर शिविर

वैकुंठवासी गुरू महाराज जी की पुण्यतिथि 22 मई पर आयोजित विशाल स्वास्थ्य जांच शिविर का उद्घाटन करते हमारे परम पूज्य श्री गुरू महाराज जी अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज। 2- वैकुंठवासी श्री गुरु महाराज के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित करते गुरुजी 3- भक्तों को गुरू महाराज का संदेश प्रदान करते वर्तमान गुरुजी एवं 4-उपस्थित भक्तजन 5-स्वास्थ्य शिविर का लाभ लेते एवं 6-श्रद्धासुमन अर्पित करते भक्तजन

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794-795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092 से मुद्रित व ई-9 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित। संपादक-शकुन रघुवंशी